सहायक ग्रन्थ सूची

1. चन्द्रकान्ता, प्रश्नों के दायरे में (साक्षात्कार), अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर, प्र. सं: २०१५, उत्तर प्रदेश- २०८०१२.
2. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, अरु पब्लिकेशन्स प्रा.लि, दरियागंज, प्र.सं: २००८, नई दिल्ली- ११०००२.
3. चन्द्रकान्ता, हाशिए की इबारतें, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, प्र. सं: २००९, नई दिल्ली- ११०००२.
4. चन्द्रकान्ता, सूरज उगने तक, इस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, प्र.सं: १९९४, नई दिल्ली- ११०००३.
5. चन्द्रकान्ता, यहीं कहीं आसपास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, प्र. सं: १९९९, नई दिल्ली-११०००२.
6. डॉ. अमोल पालवर, चन्द्रकान्ता का कथा साहित्य समकालीन परिवेश तथा सन्दर्भ, रोली प्रकाशन, कानपुर- २०१६.
7. मेय फ़्लवर. के. ए, उपन्यासकार चन्द्रकान्ता का रचना संसार, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २००९.
8. डॉ. पूर्णिमा शर्मा, भारत में नारी सशक्तीकरण का व्यावहारिक स्वरूप, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं: २०१५.
9. सुधा जैन, आधुनिक नारी: दशा और दिशाएँ, सूर्य भारती प्रकाशन, नई दिल्ली- २००४.
10. डॉ. वैशाली देशपांडे, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर- २०१५.
11. डॉ. बनजा तालदी, हिन्दी महिला कहानी लेखन: स्त्री जीवन, विकास प्रकाशन, प्र. सं: २०२ १.
12. डॉ. सुधीश पचौरी, आधुनिक साहित्यिक विमर्श, वाणी प्रकाशन, दिल्ली- १९९६.
13. रमणिका गुप्ता, आधुनिक महिला लेखन, नवलेखन प्रकाशन, हजारीबाग- १९९५.

14. डॉ. उमेश माथुर, आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ, ऋषभचरण जैन एण्ड संस, नई दिल्ली-१९९५.
15. डॉ. सुमन सिँह, हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता के विविध रूप, विकास प्रकाशन, प्र.सं: २०१८.
16. डॉ. केचन गोयल, मैत्रेयी पुष्पा का नारी सशक्तीकरण, अनंग प्रकाशन, प्र.सं: २०१३.
17. डॉ.नन्ददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, भारती भण्डार, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण: २०२२.
18. कृष्णदात्त पालीवाल, आधुनिकतावाद और दलित साहित्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली- २००८.
19. डॉ. रामगोपाल सिँह, आधुनिक हिन्दी साहित्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा- १९६५.
20. डॉ. सन्तरा मीणा, नासिरा शर्मा के साहित्य में सामाजिक चिन्ताओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, विकास प्रकाशन, प्र. सं: २०१४.
21. प्रो (डॉ.) संजय ढोडरे, समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श, विकास प्रकाशन, प्र. सं: २०२४.
22. डॉ. हेतु भारद्वाज, हिन्दी उपन्यास: उद्भव और विकास, पंचषील प्रकाषन, जयपुर- २००५
23. देवशंकर नवीन, उत्तर आधुनिकता: कुछ विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- २०००.
24. प्राचार्य बापूराव देसाई, हिन्दी कहानी में नारी विमर्श, पराग प्रकाशन, प्र. सं: २०१७.
25. डॉ. वी. के अब्दुल जलील, आधुनिक हिन्दी साहित्य के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली- २०००.
26. इन्द्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिन्दी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली- १९७३.
27. पूनम रल्हन, पैरेंन्टिंग आजकल: साइकॉलाजिस्ट का नजरिया, विकास प्रकाशन, प्र. सं: २०२३.
28. डॉ. लेफ़्टिनेंट विष्णु देव सिँह मालिक, इक्कीसवीं सदी के साहित्यिक विमर्श, विकास प्रकाशन, प्र. सं: २०१३.

29. सुधीष पचौरी, उत्तर यथार्थवाद, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली- २००५.

30. डॉ. रामविनोद सिँह, आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, अनुपम प्रकाशन, पाटना- १९८०.

31. राजेन्द्र यादव, उपन्यास स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९७.

32. डॉ. चन्द्रकान्त बाँदिवडेकर, उपन्यास स्थिति और गति, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली- १९७७.

33. डॉ. जी पद्मावती, इक्कीसवीं सदी की लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विमर्श, विकास प्रकाशन, प्र. सं: २०२१.

34. डॉ. सूतदेव हँस, उपन्यासकार चतुरसेन शास्त्री के नारी पात्र, भारती ग्रन्थ निकेतन, नई दिल्ली- १९७४.

35. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- २००९.

36. आशा रानी व्होरा, औरत: कल, आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद- २००६.

37. डॉ. प्रमीला के पी, कुंजबिहारी पचौरी, औरत की अभिव्यक्ति एवं आदमी का अधिकार, जवाहर पुस्तकालय, सदर बाज़ार, मथुरा- २००८.

38. डॉ. अनीता श्रीवास्तव, नारी अपराध-एक विवेचन, पोईन्टर पब्लिशर्स, जयपुर- २००१.

39. डॉ. आर.पी. भोसले, कुसुम अंजल के हिन्दी साहित्य में चित्रित नारी-जीवन के विविध आयाम, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर- २०१२.

40. डॉ. अमरनाथ, नारी का मुक्ति संघर्ष, माधव पब्लिकेशन, उत्तर प्रदेश- २००६.

41. डॉ. धर्मपाल, नारी एक विवचन, भावना प्रकाशन, दिल्ली- १९९६.

42. सरला माहेश्वरी, नारी प्रश्न, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९८.

43. कमला भसीन, निधन सईद, खान जागोरी, नारीवाद- यह आखिर है क्या? वुमेन अनलिमिटड- १९८६.

44. डॉ. रामचन्द्र मुंजाजी भिसे, भारतीय समाज एवं महिला सशक्तीकरण, विकास प्रकाशन, कानपुर- २०१३.

45. डॉ. नीरा देसाई, भारतीय समाज में नारी, मेकमिलन प्रकाशन, नई दिल्ली- १९८२.

46. आशा रानी व्होरा, भारतीय नारी: अस्मिता और अधिकार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई

दिल्ली- १९८६.

47. डॉ. उमाशुक्ल, भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद- २००९.
48. अनुराधा गाँधी, भारत में नारी आन्दोलन की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती प्रकाशन, उन्नीसवीं संकलन- १९९३.
49. नीरु अग्रवाल, भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास उपन्यास, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली- २०१५.
50. डॉ. शीलप्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ, विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर- १९८७.
51. डॉ. शशि जैकब, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- १९८९.
52. डॉ. अमर ज्योति, महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर- २०१२.
53. डॉ. उषा पांडेय, मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना, हिन्दी साहित्य संसार, नई दिल्ली- १९५९.
54. डॉ. रेखा पाटील, समकालीन लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- २०१३.
55. डॉ. प्रेरणा तिवारी, समकालीन हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में कामकाजी स्त्री, विद्या प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश - २०१४.
56. डॉ. विमला शर्मा, साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूप, संगम प्रकाशन, इलाहाबाद- १९८७.
57. सुभाष सेतिया, स्त्री अस्मिता के प्रश्न, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली- २००९.
58. डॉ. स्वाति नारखेड़े, महिला रचनाकारों के उपन्यासों में नारी सशक्तीकरण, विद्या प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, प्र. सं: २०१३.

59.डॉ. दशवंतवर संतोषकुमार लक्ष्मण, डॉ. शेख मुखत्यार, विकार प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, प्र. सं: २०१३.

60. रेखा कस्तवार, स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- २००६.

61. डॉ. वैशाली देशपांडे, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, -२००७.

62. डॉ. स्वर्ण कान्त तलवार, हिन्दी उपन्यास और नारी समस्याएँ, जयभारती प्रकाशन, नई दिल्ली-१९९३.

63. रोहिणी अग्रवाल, हिन्दी उपन्यासों में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९२.

64. डॉ. उषा सपकाले, हिन्दी उपन्यासों में नारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर- २०१४.

65. शैल रस्तोगी, हिन्दी उपन्यासों में नारी, विभु प्रकाशन, साहिबाबाद- १९७७.

66. रेवा कुलकर्णी, हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- १९९४.

67. आदिनाथ भाकड़, रामणिका गुप्ता के उपन्यासों में नारी, विनय प्रकाशन, प्र. सं: २०१८.

68. डॉ. श्रद्धा उपाध्याय, हिन्दी उपन्यास: वस्तु एवं शिल्प, अमल प्रकाशन, कानपुर- २०१२.

69. रामजी मिश्र, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, ८ नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली- १९८०.

70. प्रमील कपूर, भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली- १९७६.

71. डॉ. लता कुमारी, समकालीन महिला हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी जीवन, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २०१४.

72. डॉ. सरिता कुमार, महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप विकास, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज अन्सारी रोड, नई दिल्ली- १९८३.

73. सुरेश सिँह, हिन्दी उपन्यास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद- १९७२.

74. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास एक अंतरयात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- १९६८.

75. अतुलवीर अरोड़ा, आधुनिकता के सन्दर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास, पब्लिकेशन ब्यूरो, चंडीगढ़- १९७४.

76. डॉ. अमर प्रसाद गणेश प्रसाद, हिन्दी लघु उपन्यास, विद्याविहार कानपूर, उत्तर प्रदेश- १९८४.

77. डॉ. अमोल कासार, चन्द्रकान्ता का कथा साहित्य समकालीन परिवेश तथा सन्दर्भ, दक्षिण भारत हिन्दी परिषद, कोल्हापूर, महाराष्ट्र- २००४.

78. आभा भट्ट, हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग चेतना, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद- १९९४.

79. आशारानी व्होरा, भारतीय नारी: अस्मिता और अधिकार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली- १९८६.

80. आर. सुरेन्द्रन, स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद- १९९७.

81. ओमप्रकाश शर्मा, समकालीन महिला लेखन, पूजा प्रकाशन, नई दिल्ली- २००२.

82. इन्दुप्रकाश पांडेय, हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली- २००४.

83. इन्दुनाथ मदान, हिन्दी उपन्यास: पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९३.

84. उषा यादव, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९९.

85. डॉ. एच. जी. सालुंखे, हिन्दी मार्क्सवादी उपन्यासों की नायिकाएँ, अलका प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- १९९२.

86. डॉ. एन. रवीन्द्रनाथ, मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- १९८९.

87. कृष्णकुमार बिस्सा 'चंद्र', साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में राजनीतिक चेतना, दिनमान प्रकाशन- १९८४.

88. गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, इलाहाबाद- २००२.

89. चन्द्रकान्ता, सलाखों के पीछे, स्वाति प्रकाशन, हैदराबाद- १९७५.

90. चंद्रभानु सोनवर्ण, हिन्दी उपन्यास विविध आयाम, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान- १९७८.

91. जॉर्ज माम्मन, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और आधुनिकता बोध, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा- २००६.

92. सं. दिनेशनन्दिनी डालमिया संतोष गोयल, नारी एक सफर, ज्ञान भारती प्रकाशन, नई दिल्ली-२००८.

93. डॉ. कमलेश महाजन, डॉ. धर्मवीर महाजन, भारतीय समाज: मुद्दे एवं समस्याएँ, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली- २००७.

94. डॉ. नत्थूलाल गुप्त, मानव मूल्य, संस्कृति और साहित्य, मोहित पब्लिकेशन्स- १९९५.

95. सं. डॉ. नगेन्द्र, सह. सं. डॉ. सुरेशचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैकस- १९८३.

96. डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', साहित्य, शिक्षा और सामाजिक सरोकार, श्रुति पब्लिकेशन्स- २०१०.

97. पारूकान्त देसाई, हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परमपरा में साठोत्तरी उपन्यास, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- २००२.

98. डॉ. पवित्र कुमार, सामाजिक समस्याएँ कारण एवं समाधान, आकाश गंगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली-२००९.

99. प्रकाश नारायण नाटाणी प्रज्ञा शर्मा, भारत में सामाजिक समस्याएँ, पोइन्टर पब्लिशर्स- २०००.

100. डॉ. प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली- १९७६.

101. डॉ. बापूराव देसाई, स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, विकास प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- २०००.

102. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, हिन्दी का स्वतंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, अन्नपूर्णा प्रकाशन- १९७२.

103. डॉ. धन्या के. पी, नारी का चरित्र गढ़न मन्नू भण्डारी और उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, प्र.सं: २०२१.

104. महेन्द्र कुमार जैन, हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली- १९७४.

105. मेय फ्लवर के. ए, उपन्यासकार चन्द्रकान्ता का रचना संसार, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २००९.

106. डॉ. रमेश तिवारी, हिन्दी उपन्यास साहित्य का साँस्कृतिक अध्ययन, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद- १९७२.

107. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणासी, उत्तर प्रदेश - २००४.

108. डॉ. अनीता, पर्यायवाची स्त्री (स्त्री विमर्श का नूतन परिशिष्ट), जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, प्र. सं: २०२३.

109. डॉ. रामेश्वर नारायण, साहित्य में नारी: विविध सन्दर्भ, नचिकेता प्रकाशन- १९९९.

110. डॉ. रेखा मुले, कथाकार चन्द्रकान्ता, विकास प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश - २००५.

111 वीरेन्द्र प्रकाश, भारत में सामाजिक परिवर्तन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान- १९९९.

112 डॉ. शीला प्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ, विद्या विहार प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- १९८७.

113 डॉ. संगीता. के, नारी चेतना की सार्थक तलाश, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २०१३.

114 डॉ. सच्चिदानन्द राय, हिन्दी उपन्यास साँस्कृतिक एवं मानवातावादी चेतना, राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद- १९७९.

115. सच्चिदानन्द सिन्हा, भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ, गंगा डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली- २००३.

116. डॉ. सूतदेव हंस, आचार्य चतुरसेन के उपन्यासों में नारी, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली- १९८२.

117. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली, संस्करण: २००६.

118. डॉ. उषा सपकाले, हिन्दी उपन्यासों में नारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर- २२, प्र. सं: २०१६.

119. डॉ. इन्दु के. वी, नारी संघर्ष: यात्रा के विविध रंग, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उ. प्र- २०१५.

120. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी उपन्यास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सं: २००६.

121. गोपाल राय, हिन्दी साहित्य का इतिहास, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली, संस्करण: २००२.

122. डॉ. धन्या के. पी, भारतीय नारी परंपरा और उसमें आये बदलाव, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २०२१.

123. डॉ. लेखा एम, समकालीन साहित्य नई पीढ़ी की सोच, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश -२०१५.

124. कस्तवार रेखा, स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली, प्र. सं: २००६.

125. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री कामना की दस वार्ताएँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली- २०१०.

126. गुप्ता रामणिका, स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, समय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं: २०१४.

127. चतुर्वेदी जगदीश्वर, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि, नई दिल्ली- २०११.

128.थरात विमल, दलित साहित्य का स्त्रीवादी स्वर, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स- नई दिल्ली.

129. बोउवार द सीमोन, स्त्री: उपेक्षिता The Second Sex का हिन्दी रूपांतरण, हिन्दी पाकेट बुक्स, नई दिल्ली- २००४.

130. यादव राजेन्द्र, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, नई दिल्ली, प्र. सं: २००६.

131. गोपाल राय, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, नई दिल्ली, प्र. सं: २००६.

132. दीक्षित दया, मैत्रेयी पुष्पा तथ्य और सत्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, प्र. सं: २०११.

133. सिँह विजय बहादुर, मैत्रेयी पुष्पा स्त्री होने की कथा, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं: २०११.

134. सुमन राजे, इतिहास में स्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र.सं: २०१२.

135. जैन अरविन्द, औरत: अस्तित्व और अस्मिता महिला लेखन का समाजशास्त्रीय अध्ययन, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि, नई दिल्ली- २०१३.

136. डॉ. मेय फ़्लवर, साम्प्रदायिकता और आतंकवाद की आपदाएँ हिन्दी उपन्यास में (१९७० के बाद) जवाहर प्रकाशन, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २०११.

137. डॉ. सुरेश गायकवाड, जैनेन्द्र के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ, साहित्य रत्नाकर, प्र. सं: १९९१.

138. डॉ. ऊर्मिला गुप्ता, हिन्दी कथा साहित्य के विकास में महिलाओं का योग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- १९६६.

139. डॉ. शशि जेकब, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश, प्र. सं: १९८९.

140. डॉ. जगदीश चव्हाण, चन्द्रकान्ता का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन, गुजैनी, कानपुर, प्र. सं: २०१२.

141. डॉ. सुरेश कुमार जैन, हिन्दी साहित्य का इतिहास: नए विचार नई दृष्टि, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं: २००८.

142. सं. दिनेशनन्दिनी डालमिया संतोष गोयल, नारी एक सफर, ज्ञानभारती प्रकाशन, नई दिल्ली- २००९.

143.डॉ. कमलसेश महाजन, डॉ. धर्मवीर महाजन, भारतीय समाज: मुद्दे एवं समस्याएँ, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली- २००७.

144. डॉ. नत्थूलाल गुप्त, मानव मूल्य, संस्कृति और साहित्य, मोहित पब्लिकेशन्स, १९९५.

145. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, १९८३.

146. डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', साहित्य, शिक्षा और सामाजिक सरोकार, श्रुति पब्लिकेशन्स, २०१०.

147. परूकान्त देसाई, हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर- २००२.

148. डॉ. पवित्र कुमार, सामाजिक समस्याएँ कारण एवं समाधान, आकाश गंगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली- २००९.

149. डॉ. प्रमिला कपूर, कामकाजी भारतीय नारी, राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली- १९७६.

150. प्रभा खेतान, उपनिवेश में स्त्री (मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ), राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली.

151. डॉ. बापूराव शेखर तिवारी, हिन्दी का स्वतंत्र्योंत्तर हास्य व्यंग्य, अन्नपूर्ण प्रकाशन, १९७२.

152. महेन्द्र कुमार जैन, हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण, जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली- १९७४.

153. डॉ. रमेश तिवारी, हिन्दी उपन्यास सठोत्तरीय का साँस्कृतिक अध्ययन, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद- १९७२.

154. डॉ. रामेश्वर नारायण, साहित्य में नारी: विविध सन्दर्भ, नचिकेता प्रकाशन, १९९९.

155. डॉ. अमोल कासार, चन्द्रकान्ता का कथा साहित्य: समकालीन परिवेश तथा सन्दर्भ, दक्षिण भारत हिन्दी परिषद, कोल्हापूर, महाराष्ट्र- २००४.

156. आशारानी व्होरा, भारतीय नारी: अस्मिता और अधिकार, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली: १९८६.

157. ओमप्रकाश शर्मा, समकालीन महिला लेखन, पूजा प्रकाशन, नई दिल्ली- २००२.

158. इन्दुप्रकाश पाण्डेय, हिन्दी के अधुनातन नारी उपन्यास, हिन्दी बुक सेन्टर, नई दिल्ली- २००४.

159. इन्दुनाथ मदान, हिन्दी उपन्यास: पहचान और परख, लिपि प्रकाशन, १९९३.

160. उषा यादव, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों में मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९९.

161. डॉ. एच. जी, सालुंखे, हिन्दी मार्क्सवादी उपन्यासों की नायिकाएँ, अलका प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश- १९९२.

162. डॉ. एन. रवीन्द्रनाथ, मार्क्सवाद और हिन्दी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- १९८९.

163. चन्द्रभानु सोनवर्ण, हिन्दी उपन्यास विविध आयाम, ओनचशील प्रकाशन, जयपुर- १९७८.

164. जार्ज माम्मन, स्वतंत्र्योंत्तर हिन्दी उपन्यास और आधुनिकता बोध, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- २००६.

165. डॉ. तेजपाल चौधरी, हिन्दी व्यंग्य बदलते प्रतिमान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान-१९७८.

166. डॉ. मुश्ताक अहमद, चन्द्रकान्ता के कथा साहित्य का मूल्याँकन, मोहित पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं: २००४.

167. जैन अरविन्द, औरत होने की सज़ा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली- २०११.

168. दीक्षित जे एन, भारत की विदेशी नीति और आतंकवाद, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली- २००६.

169. डॉ. रामा नवले, मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं: २००७.

170. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली- २०१४.

171. मिल स्टुअर्ट जॉन, स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली- २००९.

172. पाण्डेय मैनेजर, साहित्य और इतिहास दृष्टि, पीपुल्स लिटरेसी, प्र. सं: १९८१.

173. सुधा अरोड़ा, आम आदमी ज़िन्दा सवाल, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली- २००९.

174. भारती नरेश, आतंकवाद, साहित्य प्रकाशन, मयूर विहार, नई दिल्ली- २००७.

175. वोल्टन क्राफ्ट मेरी, स्त्री अधिकारों का औचित्य-साधन, हिन्दी अनुवाद, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, नई दिल्ली- २००९.

176. प्रभा खेतान, बाज़ार के बीच: बाज़ार के खिलाफ भूमण्डलीकरण और स्त्री के प्रश्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- २०१०.

177. डॉ. सीता मिश्रा, साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पात्रों का परिवर्तित मूल्य- बोध, अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर, उत्तर प्रदेश, प्र. सं: २०१०.

178. डॉ. उषा यादव, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं: १९९९.

179. डॉ. कृष्णकुमार रत्तू, जिहाद और आतंक, बुक एन क्लब, जयपुर, राजस्थान, प्र. सं: २००२.

180. डॉ. शील प्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ, विद्या विहार, कानपुर, उत्तर प्रदेश, प्र. सं: १९८७.

181. श्री धरम, स्त्री: संघर्ष और सृजन, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र. सं: २००८.

182. डॉ. पवित्र कुमार शर्मा, सामाजिक समस्याएँ: कारण एवं समाधान, आकाश गंगा पब्लिकेशन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली- २००९.

183. डॉ. रामकली सराफ़, समकालीन हिन्दी कथा लेखिकाएँ, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी, प्र. सं: १९८८.

184. डॉ. पुष्पपाल सिँह, भूमण्डलीकरण और हिन्दी उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं: २०१२.

185. डॉ. रेखा मुले, कथाकार चन्द्रकान्ता, विकास प्रकाशन, कानपुर- २००५.

186. रोहिणी अग्रवाल, इतिवृत्त की संरचना और स्वरूप, आधार प्राशन, हरियाणा- २००६.

187. वीरेंद्र प्रकाश, भारत में सामाजिक परिवर्तन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर- १९९९.

188. डॉ. शील प्रभा वर्मा, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ, विद्या विहार प्रकाशन, कानपुर- १९८७.

189. डॉ. शशि जेकब, महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उत्तर प्रदेश- १९८९.

190. डॉ. सच्चिदानन्द राय, हिन्दी उपन्यास साँस्कृतिक एवं मानवदावादी चेतना, राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद- १९७९.

191. सच्चिदानन्द सिन्हा, भूमण्डलीकरण की चुनौतियाँ, गंगा डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, २००३.

192. प्रज्ञा शर्मा, भारतीय समाज में नारी, पाईन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, राजस्थान.

193. साधना अग्रवाल, वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिली- १९९५.

194. डॉ. सुधाकर अदीब, हिन्दी उपन्यासों में प्रशासन, अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९६.

195. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

196. सुधीश पचौरी, भूमण्डलीकरण बाजोर और हिन्दी, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली- २००४.

197. डॉ. सुब्राम्व नामदेव जाधव, रांदारक्ष मिश्र के उपन्यासों में चित्रित समस्याएँ विविध आयाम, साहित्य सागर, कानपुर- २००९.

198. उषा पाण्डेय, मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना, हिन्दी साहित्य संसार, नई दिल्ली.

199. उषा यादव, हिन्दी के उपन्यासकारों की मानवीय चेतना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- १९९९.

200. कमला प्रसाद, स्त्री मुक्ति का सपना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

201. जगदीश चतुर्वेदी, सुधा सिँह, स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा, आनन्द प्रकाशन, कोलकत्ता- २००४.

पत्र – पत्रिकाएँ

1. डॉ.अर्चना कुमारी, भारतीय समाज और स्त्री अस्मिता, International Journal of Arts, Humanities and Social Sciences, ISSN: २६६४-८६५२.

2. पूनम साहू, वासुदेव साहसी, महिला सशक्तीकरण दशा एवं दिशा, International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, ISSN: २३४७-५१४५, Vol.१, Issue: २, २०१३.

3. प्रमोद कुमार यादव, आधी दुनिया: स्त्री अस्मिता का उभार बनाम सामाजिक संघर्ष, अपनी माटी, ISSN: २३२२-०७२४.

4. डॉ. गोविन्द द्विवेदी, नारी अस्मिता का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ में वर्णन, E.ISSN: २२३०-७५४०, Issue: १, Vol.१६, जून- २०२०.

5. डॉ. सिन्धु जी. आर, नारी की अस्मिता: समकालीन उपन्यास में, शोध सरोवर पत्रिका, ISSN: २४५६-६२५x, अंक-२८, अक्तूबर-२०२३.

6. सुधा सिँह, स्त्री भाषा और हिन्दी की स्त्री आलोचना का प्रश्न, के. हि. नि. भाषा, ISSN: ०५२३-१४१८, अंक-३१२, जनवरी-फरवरी-२०२४.

7. डॉ. नवीन कुमार, वर्तमान समय के हिन्दी साहित्य में महिलाओं के योगदान का एक अध्ययन, बहुरि नहिं आवना, ISSN: २३२०-७६०४, अंक- २६, जनवरी-मार्च-२०२४.
8. राहुल यादव, डॉ. वसुधा कुलश्रेष्ठ, महिला सशक्तीकरण के वर्तमान युग में अधिकार एवं सामाजिक जागरूकता, बहुरि नहिं आवना, ISSN: २३२०-७६०४, अंक- २५, अक्तूबर-दिसम्बर-२०२३.
9. करुणा शंकर उपाध्याय, हिन्दी का वैश्वीकरण, के.हि.सं.गवेषणा, ISSN: ०४३५-१४६५, अंक- १३०, अक्तूबर-दिसम्बर-२०२२.
10. आभा कुमारी, चन्द्रकान्ता के उपन्यासों का अध्ययन, Airo International Research Journal, ISSN: २३२०-३७१४, मेई-२०१८.
11. मुकेश धैया, डॉ. अनुपम कुमार, समकालीन हिन्दी उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री जीवन, Research Review International Journal of Multidisciplinary, ISSN: २४५५-३०८५, फरवरी २०१९.
12. एम रघुनाथ, समकालीन हिन्दी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ-नारी जीवन, International Journal of Sanskritik Research, ISSN: २३९४-७५१९, २०१६.
13. डॉ. ज्योति बाला, हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श, शब्द - ब्रह्म, भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, E. ISSN: २३२०-०८७१, जुलाई २०१७.
14. पत्की ए. सी, स्त्री विमर्श और हिन्दी उपन्यास, Indian Streams Research Journal, International Recognized Multidisciplinary Research Journal, ISSN: २२३०-७८५०, जनवरी-२०१६.
15. संग्रथन, वी. वी. विश्वम (मुख्य संपादक) हिन्दी विद्यापीठ, तिरुवनन्तपुरम, केरल, जनवरी-२०२१.
16. शिवना साहित्यिकी, ISSN: २४५५-९७१७, अप्रैल-जून- २०२४.
17. आश्वस्त, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उज्जैन की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, ISSN: २४५६-८८५९, जून- २०२४.

18. आलोचना, त्रैमासिक पत्रिका, राजकमल प्रकाशन प्र. लि, ISSN: २२३१-६३२९, दरियागंज, नई दिल्ली, जुलाई-सितम्बर-२०२३,
19. द्विभाषी राष्ट्रसेवक, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, ISSN: २३२१-४९४५, मार्च-२०२४.
20. शोध सरोवर पत्रिका, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी, ISSN: २४५६ - ६२५x, जुलाई-२०२४.

Sl.No.	WEB SITE
1	https://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v3i6/sbd-v3-i6-sn1.pdf
2	https://hindi.news18.com/news/literature/year-ender-2022-in-hindi-women-literature-women-writing-women-authors-female-writers-mahila-lekhika-stri-lekhan-5125961.html
3	https://hastaksher.com
4	https://manuu.edu.in/dde/sites/default/files/DDE/DDE-SelfLearnmaterial/MA-Hindi-Sem/Hindi_Katha_Sahitya_compressed.pdf
5	https://www.drishtiias.com/hindi/mains-practice-question/question-
6	https://core.ac.uk/download/pdf/144516835.pdf
7	https://drnarayanaraju.blogspot.com/2019/01/blog-post_11.html
8	https://ia904707.us.archive.org/19/items/in.ernet.dli.2015.480329/2015.480329.1960-Se.pdf
9	https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp12/chapter
10	https://www.uok.ac.in/digital_thesis/282_Kanchan%20Bhanawat%20(Hindi).pdf
11	https://ginajournal.com
12	https://streekaal.com/2016/06/19/researchpaper-consumerismandwomen/
13	https://www.thoughtco.com/consumerist-culture-3026120
14	https://www.albany.edu/jmmh/vol1no1/peiss-text.html
15	https://web.pdx.edu/~caskeym/iroquois_web/html/colonialwoman.htm
16	https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/45521/1/Unit-29.pdf

17	https://www.api-gbv.org/resources/colonization-violence-against-women/
18	https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/women-empowerment-in-india-does-colonial-history-matter-hindi.html
19	https://www.socialstudiesjournal.com/archives/2023/vol5issue1/PartB/5-1-9-190.pdf
20	https://www.socialstudiesjournal.com/archives/2023/vol5issue1/PartB/5-1-9-190.pdf
21	https://www.jansatta.com/sunday-magazine/jansatta-ravivari-column-on-asmita-aur-mukti-ki-badalti-dishayen/1170175/
22	https://www.shivajicollege.ac.in/sPanel/uploads/econtent/3438cc6a3dac007b48de35bf8054fd56.pdf
23	https://respectphoneline.org.uk/resources/resources-for-perpetrators/self-help-guide-for-heterosexual-women-using-abusive-behaviours-in-intimate-relationships/
24	https://ignited.in/index.php/jasrae/article/download/9937/19678/49158?inline=1
25	https://www.rajasthali.marudharacollege.ac.in/papers/Volume-1/Issue-3/03-32.pdf
26	https://hindi.idronline.org/article/keeping-dignity-at-the-centre-of-womens-land-rights/
27	https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/asmita-vimarsh.html
28	https://pskcollegedeur.ac.in/wp-content/uploads/2022/01/19-URA-2016-2017.pdf
29	https://www.exoticindiaart.com/book/details/21-literature-and-women-s-discourse-of-21st-century-uaj677/

30	https://vishwahindijan.blogspot.com/2021/01/asmita-vimarsh.html
31	https://anubooks.com/uploads/session_pdf/16629621149.pdf
32	https://ijrrssonline.in/AbstractView.aspx?PID=2013-1-2-

कोश ग्रन्थ

1. कौशिक आदित्येश्वर, अभिनव संस्कृत- हिन्दी कोश, आशुनीक प्रकाशन, मौजापुर, नई दिल्ली- सं. २००१.
2. वर्मा रामचन्द्र (संपादक), संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, षष्ठ संस्करण- १९५७.
3. वर्मा आचार्य रामचन्द्र (संपादक), लोकभारती बृहत प्रामाणिक कोश, लोकभारती प्रकाशन, तृतीय संशोधित संस्करण- १९९६.

परिशिष्ट

चन्द्रकान्ता से साक्षात्कार

एवं

आशीर्वचन पत्र

साक्षात्कार

1. चन्द्रकान्ता जी, आप अब कहाँ रहती हैं और आपके परिवार में कौन हैं?

वैसे तो मैं कश्मीर से हूँ, पर कश्मीर के उस समय की हालात से हमें वहाँ से निकालना पड़ा। अभी मैं गुड़गाँव में हूँ, दिल्ली के पास रहती है। मेरे दो बच्चे हैं और दोनों बड़े हो गए हैं। एक बेटा अमरिका में रहता है और बेटी गुड़गाँव में रहती है।

2. आपने बहुत यात्राएँ की है। अभी दो महीने पहले आप बेटे के साथ अमेरिका में थे। किस यात्रा ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है और क्यों?

देखो, यात्रा का अपना सुख होता है। कश्मीर में तो प्रकृति है ही बड़ी सी। उसका जैसाएक जगह मिलना मुश्किल है। फिर भी एक यात्रा हमारी कालिफॉर्निया के पास हुआ है, वहाँ ऊँचे पर्वत है, बहुत सुन्दर जगह है।

3. क्या आपका चन्द्रकान्ता नाम साहित्यिक है?

मेरा नाम चन्द्रकान्ता है लेकिन हमारा 'सर नेम' विशिन है। लेकिन मैं 'सर नेम' नहीं लिखती। ऐसी ही चन्द्रकान्ता विशिन हूँ मैं, लेकिन लेखन में सिर्फ चन्द्रकान्ता ही लिखतीहूँ।

4. आपका बचपन कहाँ और कैसे बीता?

बचपन तो ज़ाहिर कश्मीर में पैदा हुई तो वहाँ बीता श्रीनगर के कश्मीर में। बचपन अच्छा ही था। यह ज़रूरी है कि माँ की मृत्यु बहुत जल्दी होगई। वे बड़ी मुश्किल से तीस साल की थी और हम बहुत छोटे थे। मैं सात साल की करीब थी, तो थोड़ा दुख था; ऐसा भी होता है सब तो सुख नहीं होता है जीवन में।

5. आपके परिवार की सामाजिक स्थिति एवं धार्मिक वातावरण कैसा था?

देखिए, अगर हम धर्म की बात करें तो हम सभी धर्मों से बँधे हुए हैं। कोई हिन्दू है, कोई मुसलमान है, कोई सिख है, ईसाई है। पर हमारे पिताजी वैसे तो सनातन धर्मी थे, इसमें

तो कोई शक नहीं है। लेकिन हमारा पिता बहुत 'ओपन' विचारों के थे और वे एक समाज सुधारक भी थे। मेरा परिवार का व्यवहार मिला जुला ही था और मेरे घर में हमारा सेवक था, उसने मुझे पाला है। मैं उसको बहुत याद करती हूँ, तो ऐसा एक मिला जुला माहौल ही था हमारा।

6. आपके पिताजी एक अध्यापक थे, उनके व्यक्तित्व का आप पर कितना प्रभाव पड़ा? अपनी संस्मरणात्मक ग्रन्थ 'मेरे भोज पत्र' में लिखा है कि पंडिता साहब को उनके सहकर्मियों ने 'ग्रेट ग्राम्मेरियन' कहकर बुलाया करते थे।

हमारा पिताजी प्रोफ़ेसर थे, प्रोफ़ेसर रामचन्द्र पाण्डे। अंग्रेज़ी और मैथ्स के बड़े विद्वान थे। पूरा जम्मु कश्मीर उनको जानता था। उम्र भर उन्होंने पढ़ाने का ही काम किया है। उन्होंने 'ग्रैमर' के विश्वस्तक एवं बड़े विद्वान थे। उन्होंने ज़िन्दगी में 'थ्रू आउट' अंग्रेज़ी साहित्य पढ़ाया और वे 'ग्रैमर' के बारे में बहुत ही 'पर्टिक्युलर' थे। बचपन में मैं कोई चिट्ठी लिखी थी अंग्रेज़ी में, अगर उसमें कुछ 'मिस्टैक' होती तो वे चिट्ठी ठीक करके वापस भेज देते थे। वे संस्कृत एवं उर्दू भी जानते थे, लेकिन उन्होंने ज़्यादात्तर अंग्रेज़ी साहित्य में ही काम किया।

7. आपने अपने पिता के बारे में यह भी लिखा है- 'स्वस्थ समाज का निर्माण उनका सपना भी था ध्येय भी' अब आप यह सब कैसे याद करती है?

बिल्कुल थी, बिल्कुल थी। देखिए, मेरे पिता के बहुत प्रभाव है। क्योंकि मेरी छोटी उम्र मे ही मेरी माँ का देहान्त हुआ। पिताजी को लगा शायद उनको माँ मिल जाएगी तो सम्भालते थे। छोटी उम्र में मेरी शादी हुई और माँ का प्यार तो हम सब जानते है। फिर भी मेरी साँस जी अच्छी थी और बहुत छोटी थी मैं तो उनके साथ रही कई साल। मैंने एक उपन्यास लिखा है 'यहाँ वितस्ता बहती है'। मेरे पिताजी को एक मकान था वितस्ता के किनारे, उन्हीं

पर आधारित उपन्यास है और उसमें मैंने अज्ञेय की एक पंक्ति लिखी है।

'आपने कभी

चाय पीते हुए

पिता के बारे में सोचा है?

अच्छी बात नहीं है

पिताओं के बारे में सोचना।

अपनी कलई खुल जाती है।'

पिता बड़े विद्वान एवं समाज सुधारक थे। एक बात उन्होंने मुझे सिखाया कि जो भी करना है, तो सबसे पहले अपने घर से शुरू करें। उन्होंने दहेज प्रथा का विरोध किया।

8. आपको अपने माँ के बारे में क्या याद है?

माँ के बारे में बहुत याद है और मैं छोटी थी। वो मुझे 'कलंदर' बुलाती थी, मैं एकदम मस्त थी। उनको क्षय रोग हुआ, जिसका कोई इलाज नहीं था। मैंने सोचा कि माँ अच्छी हो जाएगी।

9. सुना है, आपकी शादी तेरह साल की उम्र में हो गई थी और उस समय आपका अनुभव कैसा था? छोटी उम्र में शादी होने से आपको किसी प्रकार की तकलीफ़ और परेशानी महसूस हुई?

तेरह साल में मैं बड़ी कलंदर लड़की थी। माँ की मृत्यु हुई तो एक अभाव रहता है, फिर भी पिताजी हमें अभाव महसूस होने नहीं दिया और ऐसी शादी की बात में मैं मस्त थी। अरे क्या करना! ससुराल जाना है, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनना है। शाम को वापस आऊँगी। मुझे समझ में नहीं आया था कि मैं उम्र भर केलिए बन्ध गई हूँ। क्योंकि मेरा उम्र ऐसा ही; और माँ भी नहीं थी कुछ समझाने को। उस समय मैं 'मेट्रिक' कर रही थी तो पिताजी ने एक 'प्रामिस' ज़रूर हमारे ससुर जी से लिया था कि भाई एक शर्त पर ही शादी हो रही है कि आप इनको पढ़ाई में रुकेगा नहीं। अब तो वह स्कूल जाएगी, कॉलेज

भी जाएगी, यूनिवर्सिटी भी जाएगी, आप मना नहीं करनी चाहिए। क्योंकि शादी के बाद फिर कुछ बन्धन हो जाते है तो वो करो ये मत करो, बहू हो। उन्होंने मान लिया, बहुत कुछ एहसास है उन्होंने मुझे स्कूल-कॉलेज भेजा।

ससुराल में मुझे बहुत अजीब सी लगा। मुझे मन नहीं रहा, मैं रोती थी बहुत। मेरी मायके और ससुराल दोनों श्रीनगर में है, थोड़ी दूरी पर, तो नौकर आते थे हाल पूछने को। एक दिन नौकर ने पूछा तुम क्यों रोते हो? मैंने कहा मेरा मन नहीं लग रही है यहाँ। उसने पिताजी को बताया। पिताजी को बुरा लगा होगा कि मैंने शादी तो करवादी, लेकिन बेटी खुश नहीं, तो उन्होंने एक साल पूरा होने के बाद ससुर जी से कहा कुछ दिन और समय केलिए इनको अपनी साथ रखती हूँ। कुछ यात्राएँ करूँगा, ये भी थोड़ी छोटी है और इनको अब पता भी नहीं घर में क्या करना होता है। हम आगरा, शिमला, देहरादून गईं तो मेरा मन बदल गया और फिर से मैं मस्त लड़की बन गई; आखिर ससुराल जाना ही था। 'मय गॉड' मैं बहुत रोती थी, खाती भी नहीं, पीती भी नहीं। पढ़ाई वागेरा तो ज़ारी थी। मुझे लगा किसी ने मुझे सोने के पिंजरे में बन्द कर दिया है। बाद में धीरे-धीरे सब कुछ ठीक हो गया। आपके बच्चे क्या करते है और उनकी शिक्षा कहाँ हुई?मेरा बेटा विजय एम.बी.ए किया, बाद में वह आगे की शिक्षा प्राप्त करने केलिए विदेश गया तो वहाँ कालिफॉर्निया में 'सेटल' होगया और एक लड़की से प्यार हुआ। मेरी बेटी तो पढ़ाई की अच्छी से। दिल्ली विश्वविद्यालय से उसने एम.एस.सी और बी.एड भी किया है।

10. आप लेखन की ओर कैसे मुड़ी और आपने अध्यापकी क्यों छोड़ दी? आपकी मातृ भाषा कश्मीरी है और आपने अंग्रेज़ी में बी.ए और बी.एड किया और उसके बाद आपने हिन्दी में एम.ए की और लेखन का कार्य भी हिन्दी भाषा से ही शुरू की है। हिन्दी में रचना करने का मकसत क्या था?

देखो, यह सवाल सब मुझसे पूछते है। देखो, हमारे हिन्दी का प्रचालन तब नहीं था ज़्यादा। ठीक है पढ़ाते थे थोड़ा बहुत स्कूलों में। लेकिन लड़के उर्दू सीखते थे, वो जो

हमारी कश्मीर की भाषा थी उर्दू। जो पाँचवीं तक सिखाते थे हमें और लड़कियों को खासकर हिन्दी सिखाते थे। एक स्कूल था जिसका नाम था 'वसन्ता हाई स्कूल'। वसन्ता उन्होंने उसकी स्थापना की थी और सोचा था कि लड़कियों केलिए एक स्कूल होना चाहिए। वहाँ पर दसवीं तक हिन्दी पढ़ाई जाती थी।

पिता तो शिक्षा के प्रसारण में थे, तो एक बार त्रिभुवन कौल और विमला कौल दो भाई बहन है जिन्होंने हिन्दी के प्रति बहुत रुची रखते थे। वो आए मेरे पिताजी के पास और हिन्दी सीखने की प्रेरणा दी। अगर हमारे दिल 'पावर' है, इच्छा शक्ती है, हम कुछ भी कर सकती है। 'यू कान डू इट'। पिलानी में मैने एम.ए हिन्दी किया। मुझे यह बात मालूम हुई थी कि अगर मैं लिखूँगी तो ज़्यादा लोगों तक पहचूँगी हिन्दी के माध्यम से ही। मैंने पहली बार हिन्दी में माँ के बारे में पंक्ति लिखी, वो पढ़ते में फुट फुटकर रोयी थी। मैं यह कहना चाहती अगर तुममें लग्न है, हिम्मत है और मेहनत करना चाहती तो 'रिज़ल्ट आएगा'। मैने दो साल पिलानी में काम किया।

हैदराबाद से ही मेरी लेखन सच में शुरू हुआ। मेरे पास 'ऑप्शन' था और मैं लिखना चाहती थी, इसलिए नौकरी छोड़ी। पहली कहानी मेरी हैदराबाद से 'कल्पना पत्रिका' में प्रकाशित हुई थी। मैं बहुत खुश होगई और मुझे लिखने का एक 'बूस्ट' मिला।

11. एक स्त्री होने के नाते विशेषकर एक ख्यातिप्राप्त लेखिका के रूप में आपको किन किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा है?

चुनौतियाँ कई प्रकार के होते है, एक तो होते है साहित्य के क्षेत्र की चुनौतियाँ और दूसरा होता है पारिवारिक क्षेत्र की चुनौतियाँ। जब महिला या कोई बहू रानी कहानी और कविताएँ लिखने लगेगी तो घर के लोगों हमें शक्के नज़रों से देखता है कि अरे कहीं हमारे चीज़ तो नहीं लिख रहे है, घर की बातें तो नहीं लिख रहे है। इतना ज़्यादा नहीं हुआ उसमें। सब लोग पढ़े लिखे लोग है, फिर भी मैंने एक उपन्यास लिखा है 'बाकी सब

खैरियत है' उसमें कुछ हमारे लोग ने कहा कि तुम हमारी कहानी लिखी और घर की बातें लिखी। वो थोड़ा सा मन मुट्टा होगया, पर वो नहीं था, देखो कुछ चीज़ें हमारे परिवार में होते है और दूसरों के परिवारों में भी घटती हूँ। उसमें तो दो भाइयों का जिक्र है, एक विदेश में और एक देश में। देश के भाई पूरा सेवा करते है तो आपस में समस्या हो जाते है रिश्ते बिघट जाते है। दोनों परिवार का सेवा करते है फिर भी देश में रहने वालों को ज़्यादा पारिवारिक परेशानियाँ होते है। तो मुझे यह लगा कि ऐसा क्यूँ। देखो, उन दिनों मैं दिल्ली में थी। मेरा टाइपिस्ट 'बाकी सब खैरियत है' टाइप करते हुए मुझसे पूछा, "चन्द्रकान्ता जी, मैने तो अपने बारे में कुछ नहीं कहा? आपने मेरी बात कैसे लिखी, आपने मेरी घर की बातें लिखी है इसमें।" मैंने कहा देखो भैया, मुझे नहीं पता कि तुम कौन हो क्या हो। मतलब उनका ही ऐसा माहौल था घर में। देखिए, साहित्य वही होता है जो पढ़ते समय दूसरों को लगता है, हाँ! यह तो मैं हूँ, मेरा समाज है और ऐसा मेरे साथ भी होता है, यह तो साहित्य की भावनाएँ है उसमें।

मैंने घर परिवार को समझाया कि ऐसा कुछ नहीं है आपके बारे में मेरी लेखन में। मैं खयाल रखती हूँ, चिन्ता मत करना। अगर ऐसा होगा भी तो भूल जाओ (हँसते हुए) मैं लिखूँगी, क्योंकि मुझे लिखना है। मैंने अपने आत्मकथा नहीं लिखी, काफी लोग पूछते है; क्यों नहीं लिखती, आत्मकथा अच्छी भी हो या तो लोग फिर विश्वास नहीं करेंगे; जीवन में सभी अच्छा नहीं होता, जीवन में सब कुछ होता है। मैंने एक बात ज़रूर की है, मान लो 'बाकी सब खैरियत है' में भी मैं हूँ 'कथा सतीसर' में भी मैं हूँ लेकिन छुपी हुई, आपको पता नहीं चलता। पर जो मुझे जानते अच्छे से जो बोलते अरे! ये तो तुम हो। ऐसा बहुत होता है कहीं न कहीं।

साहित्य के क्षेत्र में चुनौतियाँ तो बहुत है। कॉलेज पढ़ते समय 'कल्पना पत्रिका' में मेरी रचना पहली बार छपी तो उस समय सब लोग पूछा, यह कौन है चन्द्रकान्ता! मैं भाग्यशाली हूँ, फिर मुझे मुड़कर नहीं देखना पड़ा; मैं लिखती रही हूँ। लेखन को संवारना

पड़ता है, लेखन एक तपस्या है और आपको समय के साथ भी देखना है। आज 'फास्ट' लेखन है उसमें अतीत भी होता है, वर्तमान भी होता है और भविष्य भी होता है। तीनों को साथ लेकर चलते है। अनुभव ज़रूरी ऐसे लिखने को। अपना अनुभव ज़रूरी है लेकिन उन अनुभवों को तुम कैसे इस्तेमाल करते है; उसमें मात्र तुम ही नहीं होती समाज भी उसमें प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। होता है सुख दुख तो सभी के है, रंग अलग होता है।

12. दाम्पत्य जीवन के बारे में आपका विचार क्या है? आपके उपन्यासों में दाम्पत्य मूल्य विघटन का उदाहरण एवं कारण विस्तार से दिये गये हैं, जैसे 'अर्थान्तर' में कम्मो-विजय का वैवाहिक जीवन, 'बाकी सब खैरियत है' में पारुल-विनू का जीवन, अनुपम-निम्मी का जीवन आदि अनेक पात्रों के उदाहरण आपके उपन्यासों में मौजूद हैं?

देखो, लेखक हमेशा अपनी ही बात नहीं कहती, अनुभव तो होते है। समाज में ऐसा भी होता है औरत जब तक काम की है तब तक वो घरवाली है। काम की नहीं तो छोड़ देती हूँ....। मेरा पड़ोस में ऐसा एक घटना हुआ तो देखकर मुझे दुख हुआ। हमारे पड़ोस में एक गुण्डा थे; वह पत्नी को पीड़ते थे। समाज में ऐसा तो होता है बहुत, सभी का ज़िन्दगी एक प्रकार नहीं होता। लेकिन आखिर क्या हुआ उस औरत 'सूइसाइड' किया। मूल्य तो बदलते है। दाम्पत्य जीवन में ऐसे अनेक विघटन होते है। वह बेचारी चाहती तो तलाक ले सकती थी, लेकिन वह नहीं लिया। 'स्ट्रगल' और संघर्ष औरतों के ज़िन्दगी में रहेगा।

13. स्त्री अस्तित्व और अस्मिता के बारे में आपकी क्या राय है? आपने आपके उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का उल्लेख किया है, उनमें अधिकांश स्त्रियाँ स्वत्वहीन एवं संघर्षभरित है। ऐसा किस लिए?

देखिए, आप अपना समाज देखिए। दुख की बात है कि पहले से ही समाज में स्त्रियों को कई बंधिशें थी। औरत चाहती थी की वे अपने मन से जीऊँ। मेरी जो इच्छा है, आकांक्षा है, स्वप्न है, हर एक स्त्री का अपना अलग स्वप्न होता है। बाद में स्त्रियों को

विष कन्याएँ बनाया, 'यूस' किया। अलग-अलग परिवारों की अलग-अलग बातें हो सकती है। हमें अस्तित्व चाहिए, स्त्रियाँ अपनी अस्मिता की तलाश में भटकती हैं।

मैं बहुत खुश हूँ कि आज लड़कियाँ पढ़ रही है, अपनी अस्तित्व को बनाए रखने की कोशिश करती है। पहले की ज़माने में पति और परिवार स्त्री को शिक्षा में उतना महत्व नहीं दिया था। अभी स्त्री कहीं-कहीं पर विद्रोह भी करते है, शादी करना भी नहीं चाहती है। वो तो उतना अच्छा नहीं है, फिर भी ठीक है। आदमी दस आदमी से प्यार कर सकता अगर स्त्री करेगी तो मारी जाएगी। अभी तो हाल ठीक है, पहले लड़कियाँ बोलती नहीं थी। यहीं अपने अस्तित्व की माँग कर रही है। आखिर ज़िन्दगी तो एक बार जीती है, बार-बार तो नहीं मिलती। परिवर्तन तो है फिर भी आगे और बढ़ना चाहिए। एक स्वस्थ समाज के लिए ज़रूरी है स्त्री को स्थायित्व। पुरुषों एवं समाज की मानसिकता बदलने में बहुत समय लगता है।

14. हम इक्कीसवीं सदी की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में है, फिर भी बहुत कुछ है बदलने को। आपकी राय?

बदलना ज़रूरी है, लेकिन देखो; यह मानसिकता जल्दी-जल्दी नहीं बदलती। उसमें सदियाँ लगती है। मुझे लगता है अगर शुरुआत की तो बदलेगा जल्दी। हमारे हक केलिए लड़ना ही है और विद्रोह भी करना है। मुझे लगता सभ्यता और संस्कार होनी चाहिए। मुझे लगता है औरतों को भी सोचना चाहिए की हम क्या चाहते है?

15. आपकी राय में आज की परिप्रेक्ष्य में स्त्री विमर्श की आवश्यकता है। क्या आज स्त्री पूर्ण रूप से मुक्त एवं स्वतंत्र है?

शिक्षा के कारण बहुत कुछ बदल गया है। आज सभी सुविधाएँ है, पूरी दुनिया से जोड़ रहे है। स्त्री का 'विशन' आज बड़ा होगया। पहले इतना सिर्फ हम जानते थे कि हमारे आसपास में क्या होता है कैसे होता है। लेकिन, आज की दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई, तो खासकर शिक्षित परिवार में जिसका असर होता है। देखो, पहले स्त्री समाज से

डरते थे, आज धीरे-धीरे समाज का डर से स्त्री मुक्ति पा रही हूँ, और खुद के सोच के अनुसार जी रही हूँ। वे अपने अधिकार के लिए लड़ रहे हैं। पुरुष कहीं न कहीं अपनी प्रकृति दिखाता है। ऐसी हालत में परिवार नहीं चलेगी। कहीं न कहीं आपको एक दूसरे को समझना है और दोनों एक दूसरे को जानना चाहिए।

16. आज स्त्री लड़ रहे है, विद्रोह भी कर रहे है; फिर भी स्त्री का शोषण हो रहे हैं, क्या आज की स्त्री-स्त्री के खिलाफ भी आ रहे है जैसे कि आपके 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मीना मौसी सच में बीजी के खिलाफ आई है और अपने पति का विवाहेतर अवैध सम्बन्ध से बीजी की परिवार टूट गया है। इसमें आपका विचार क्या है?

नहीं, इसमें एक बात है। मीना मौसी, उसकी कहानी थोड़ी अलग है। वह अपनी ज़िन्दगी से बचपन से ही दुखी है बेचारी। बचपन से उसका बहुत शोषण हुआ है। माँ बाप नहीं थी और चाचा-चाची उसे पालन पोषण किया है। ये बात तो भूलना नहीं चाहिए कि हर स्त्री के भीतर एक आकांक्षा होती है, इच्छा होती है; उसको कोई सहारा चाहिए। पैसा और खाना नहीं; स्त्री को कोई सहारा चाहिए, दोस्ती चाहिए।

तिम साक्ष्य' उपन्यास का ठाकुर तो शौकीन है गाने सुनने का। पर उसकी बीवी बेचारी। ठीक है, वो सम्पूर्ण एवं घर को समर्पित थी। उसको अपनी परिवार के अलावा और कोई इच्छा नहीं है। बीजी बेचारी रोई थी बहुत, क्योंकि ठाकुर के मीना के साथ अवैध सम्बन्ध से अपना परिवार छिन्न हो गए। ठाकुर तो पहले चुप-चुप का मिलता है बाद में उनकी पत्नी मर जाती है, तो रख गया था मीना को साथ में। जो भी हो; अन्दर से उसको लगता है पति ने जी लिया। जो भी हो; बेचारी बीजी 'रिमोट' गाँव की थी। एक तरह से दूसरों के बीच तीसरे व्यक्ति आता है तो फरक तो पड़ता है। ठाकुर बाद में मर गए बीमार से, तो मीना अकेली होगई। बाद में उसके बेटे जो मीना के विरुद्ध थे वो माँ के पक्ष में थे; उनको पता था कि ये आने से ही हमारा घर बिगड गया। दूसरा बेटा मीना को थोड़ा समझता है और उसको लगता है ये बेचारी में दुख तो होगा और हमारे तो सेवा

ही कर रही है। वह थोड़ा उसको एहसास होना लगता है। यहाँ औरत का अपना-अपना दुख है। इसका भी दुख है और उसका भी दुख है। बीजी तो 'डेडिकेटड़' औरत है और मीना मौसी पूरी उम्र भर तनाव लेती है। वो ऐसा तो नहीं था कि उसको कोई सुन्दर सा लड़का मिला और उसके पीछे भाग गई; नहीं। ठाकुर के प्रति भी जब उसको लगा इतना 'एट्राक्शन'; उसके बाद उसको भी लगा कोई दोस्त जैसा और बाद में यह सब होगया तो होना ही था। मीना तो पहले आकर जगन गुण्डा के बीच में कोठेवाली में फँस गई थी।

17. आपके उपन्यास 'अपने-अपने कोणार्क' और 'अंतिम साक्ष्य' में वैवाहिक समस्या को उठाया है, खासकर दहेज समस्या और अनमेल विवाह की। सच में आर्थिक समस्या के कारण ही यह होता है क्या? मेरा सवाल है कि अगर लड़की भी लड़कों के तरह अपने पैरों पर खड़ी हो तो क्या दहेज देने की ज़रूरत है? दहेज देने से आपका अभिप्राय क्या है जी?

देखिए, दहेज प्रथा हमारी बहुत पुरानी है। पहले-पहले यह सोचते थे कि लड़कियाँ पढ़ी लिखी नहीं होती थी ज़्यादा, बहुत पहले की बात है। मेरे ज़माने में शादी के समय अपना माता-पिता दान देते थे और कहते थे दान है ये। हम अपनी तरफ से कुछ देना चाहते है, ससुराल में रहे तो कितना होता था, चावल तक देते थे, खाने के सामग्री बर्तन, कपड़ों सब देते थे। वो चाहते थे कि हमारा लड़की बेचारी ससुराल में स्वस्थ एवं सुखी रहे। सोना भी देते थे उस ज़माने में, पर सभी लोग नहीं दे पाते थे।

बाद में लड़कियाँ पढ़ना-लड़ना शुरू हुआ तो लड़कियों ने ही कहा हमें ज़रूरत नहीं है, ज़्यादा कुछ चाहिए तो हम ही करेंगे, पर ससुराल वालों का अब यही था पुरानी बातें। नहीं आना चाहिए लड़की ऐसी, बहू आएगी तो ज़रूर लेकर आएगी। कहाँ बदलेगा यह सब? मेरे पिताजी दहेज के बहुत विरोधी थे। शायद शिक्षा से ही ये बदलेगा, नहीं तो चलता रहेगा।

18. भूमिका में आपने लिखा है 'यहाँ वितस्ता बहती है' आपकी जीवनीपरक उपन्यास है। इसे पढ़कर आपके घरवालों की क्या प्रतिक्रिया रही?

हाँ, ज़रूर उसे कह सकती हूँ जीवनीपरक उपन्यास। लेकिन मैंने थोड़ा देखो जीवनी और उपन्यास में फरक है। जीवनी में यथार्थ होता है, वास्तविकता होती है, लेकिन उपन्यास में कुछ मिलावट तो होता है। क्योंकि कुछ चीज़ें है जो हम नहीं कहना चाहते है जो न समाज के हित में है और यह भी कभी सोचेगा कि परिवार क्या सोचेंगे। उसमें ज़्यादा नहीं है सच छुपाने का। मैंने बोल दिया जो मुझे लगा जो जीवन था पिताजी का। पर उनका जीवन आदर्श जीवन था। देखिए, गलतियाँ तो होती है सभी में। कोई आदमी तो भगवान नहीं होता। उसमें कमियाँ भी होती है। फिर भी ज़्यादा कमियाँ मुझे दिखी नहीं। पिताजी शादी के बाद मुझे छोड़ दे तो पता नहीं क्या होती आजकल। कम से कम आज मेरी विश्वास है पिता और ऊपर वाले के कृपया से मैं थोड़ा अपना जगह बना चुकी हूँ। नहीं तो मैं नहीं बना पाती। कुछ तो मेरी इच्छा थी और मेरे पिताजी का बहुत 'सपोर्ट' था। छोटी मोटी गलतियाँ तो सबको होता है। हमें थोड़ा समाज को देखना है।

19.आपको कभी भी किसी रचना पुस्तक प्रकाशन के बाद ऐसा सोच विचार पैदा हुई कि यह कहानी, पात्र और भूमिका इस प्रकार नहीं होनी चाहिए?

नहीं, नहीं; इस तरह से मैंने नहीं सोचा। जब लिखती हूँ लिखते-लिखते कहीं न कहीं पहुँच जाती है। मैंने जीवन जैसे देखा और उसीके अनुरूप मैंने लिखा। कहीं-कहीं अनुभव भी लिखते है और कल्पना भी होते है; उसमें तो कई हिसाब है। फिर भी मैंने कोशिश की है कि सच लिखूँ। जो ज़रूरत नहीं मैं हटा देती हूँ।

20.आपने स्त्री पर खूब लिखा है और आपके उपन्यास स्त्री केन्द्रित है; आप स्त्री पात्रों को काफी प्रमुखता दिए है। आप इस पर टिप्पणी दे सकती है?

मैंने अपने स्त्री पात्रों के माध्यम से यह बताना चाहती हूँ कि हमें पता है स्त्री कहीं कमज़ोर भी है और विरोध भी करती है। मेरे स्त्रियाँ अपनी आचरण से बताती है

हालत। 'अपने-अपने कोणार्क' में भी ऐसी अनेक स्थितियाँ है स्त्रियों की। कोणार्क की कुनी की कई समस्याएँ है और वह सिद्धार्थ से प्यार हो जाता है लेकिन शादी नहीं हुआ। घर की बड़ी लड़की की शादी अगर नहीं हुआ तो हालत खराब होता है। देखो, बाद में उसकी शादी डॉ. अनिरुद्ध से होता है, वे पहले ही शादीशुदा है एवं उनके अपने दो बच्चे हैं। कुनी का दुख तो है अन्तर बेचारी। देखो, जीवन लम्बा नहीं है अगर तुम्हें कुछ करना लगता है तो कोशिश तो करो। कुनी को लगा कि आदमी तो ठीक है और बहुत ज़्यादा उम्मीद तो वो करती भी नहीं अपनी जीवन में।

21. आपके उपन्यासों में बदलते पारिवारिक मूल्यों पर विचार स्पष्ट दिखाई देती है। 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास का पात्र अनुपम है। वह विदेश में रहता है तो पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित हो जाता है। उनका घर का हालत बिल्कुल अलग है। क्या आपको लग रहा है कि भारतीय संस्कृति को दीमक लग रहा है?

देखिए, अगर उस तरह सोचेंगे तो कह सकते है, पर यह मानूँ कि मैं इस तरह नहीं सोचती। देखो जब हम संस्कारों और संस्कृति की बात करते है तो हमें देखना चाहिए आज की सन्दर्भ में। आप देखो, पुराने ज़माने की बात अलग थी। माहौल ऐसा था और सोच ऐसी थी, लेकिन अब बहुत बदल गया है। 'साइन्स' ने इतना बदल दिया है हमें आज किसी से डरता नहीं है। दूसरी बात यह है कि शिक्षा से हम बहुत बदल गए है और हम अपने पाँव पर खड़े रहते हैं। यह भी बहुत बड़ा कारण है बदलाव का और समय का प्रभाव तो है हर कहीं।

देखो, संस्कार क्या होता है? यह होता है तुम्हारा आचरण, तुम्हारा व्यवहार, तुम्हारा सोच विचार, तुम्हारे जीवन शैली यह सब है उसमें। धर्म के बारे में अगर बात की तो तुम्हारा धर्म तुम्हारा और मेरा धर्म मेरा है और धर्म यही है जो दूसरों के प्रति करुणा है, दया है, सहभाव है ये सब चीज़ें हैं। हमारे मूल्यों में तो थोड़ा बदलाव आ रहा है, संपत्ति आधारित दुनिया है आज का; जिनके पास धन है उसे समाज मानेगा। मतलब

संपत्ति आधारित समाज में मूल्य बदलते है। पहले ज़माने में तो माँ बाप बीमार होने से बच्चे उनके साथ रहकर सेवा करते थे, स्पर्श करते थे, लेकिन आज ऐसा नहीं सिर्फ पैसा भेज देते है और सेवक रखने को कहते है; ऐसा भी तो है समाज में। हमें बड़ों के प्रति आदर की भाव होना चाहिए।

22. आपने अधिकतर कश्मीर के दर्द, सुख, वहाँ के समस्याएँ और लोकजीवन पर लिखा है। आपके तीन उपन्यास 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है' और 'कथा सतीसर' में कश्मीरी की आतंकवाद के बारें में व्यक्त की है। इसका कारण आपकी जन्मभूमि कश्मीर होना है या और कोई कारण है?

देखो, हमारे अनुभव वहाँ से आती है जहाँ तुम्हारी ज़मीन है। मैंने कश्मीर में जन्मी और पली। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में अपना जीवन बताया। हमें बहुत अच्छी संस्कृति विरासत में कश्मीर से मिली थी। तुम सोच नहीं सकती किस तरह था जीवन हमारा। वहाँ हिन्दू- मुसलमान कम नहीं देखते थे और सूफियों का बहुत प्रभाव रहा है वहाँ।

23. इतिहास साक्षी है कि आतंकवादियों द्वारा अनेक परिवारों को कश्मीर से निष्कासित किया गया था। और कई परिवारवालों एवं बन्धुजनों को भी निष्कासन की त्रासदी भोगमी पड़ी। आप यह सब बहुत सालों के बाद कैसे याद करती है?

एक अर्थ में मैं भाग्यवान थी। क्योंकि मेरी पति को वहाँ नौकरी नहीं मिली। वो पिलानी में डॉक्टर् थे। आतंकवाद में कुछ भी हो सकता है, हमारा सब कुछ खो गया। अब सोचने से बुरा लगता है। फिर भी मुझे याद है कि हम जाते थे साल में एक बार पूरे महीना केलिए। हमने सोचा था कि 'रिटाइरमेंट' के बाद आएंगे वापस। घर तो घर ही था। कश्मीर कौन छोड़ेगा। हमारा बहुत 'गार्डेन' था उसमें गुलाब थे। कश्मीर की ज़मीन भी बड़ी उपजा हुआ था। कश्मीर की हालत ठीक नहीं है। सब 'करेप्टेड' है इधर से उधर से सब।

24.आपकी राय में कश्मीर की समस्या पहले से कम होगई है क्या?

देखो, बाहर से तो थोड़ा लगता है शान्ति। लेकिन अन्तर की हालत पता नहीं चलता कहाँ क्या विस्फोट होता है। मुझे लगता है हालत सुधरेंगी, पर समय लगता है। 'कथा सतीसर' में मैंने आतंकवाद से जुड़ी समस्याओं के बारें में विस्तार से लिखा है। गरीब आदमी सिर्फ शान्ति चाहता है अपने परिवार का। हम उम्मीद करेंगे कि हालत बदलेंगे।

25. आपने 'सूरज उगने तक' कहानी संग्रह में लिखा है "मेरेलिए लेखन जहाँ भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति है, वहीं अनुभव किए सत्य की भी। मैंने जिन सन्दर्भों एवं स्थितियों को सिद्धान्त से महसूस किया, व्यवस्था के जिन देशों ने मुझे दोषित किया, मैंने उन्हें अपनी रचनाओं में डाला। "क्या आपके सम्पूर्ण रचनाओं में भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति की है?

नहीं नहीं, यथार्थ तो होता है लेकिन कल्पना, विचार, अभिव्यक्ति कौशल है तभी साहित्य बनता है। साहित्य एक बाह्य व्यवस्था होती है, उसमें समाज एवं अपने भीतरी संसार की अभिव्यक्ति भी होती है। ये बीतरी संसार और बाहरी व्यवस्था दोनों जब टकराते है यह एक दृढ़ात्मक स्थिती है। उसीसे कहानी निकलती है और उपन्यास निकलता है। क्योंकि कुछ चीज़ें हम पसन्द करते है बाहर की और कुछ चीज़ें आपके मन के अनुकूल नहीं होती तो आप विरोध करने लगते है, ये सब चीज़ें है साहित्य में। ऐसा नहीं अपना भोगा हुआ बोलते रहेंगे। अगर वो भोगा हुआ सच दूसरों के दूसरे के सच से मिलता है तब वो साहित्य बनता है। साहित्य में सहभाव तो होता है।

26. आज की इक्कीसवीं सदी की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में सब लोग शिक्षित है, सब लोग अभी 'न्यूक्लियर फॅमिली' में भी है। फिर भी हमारा 'मेंटल हेल्थ' कम क्यूँ हो रही है? स्त्री को कभी ऐसा 'फ़ील' हो रही है कि वो 'भीड़ में भी अकेली' है।

हम शिक्षित है, फिर भी अकले हैं। इसका कारण यह है कि हम परिवार टूट रही है। जो समय बदला है उसमें दूरियाँ भी है नज़दीकियाँ भी है। अपना फ़ोन उठाओ कोई

अमरीका है तो भी तुम्हें सामने प्रकट होगा। अब दूरियाँ इसलिए है कि लोग अलग-अलग हो गए हैं परिवार टूट रहे हैं, ऐसे अनेक कारण है अकेलेपन का। स्त्री अकेलेपन इसलिए कि हमारा वातावरण बदल रहा है।

27. आप मेरे जैसे शोधार्थियों को क्या सन्देश देना चाहती है जी?

तुम अपना कर्म करो। अगर तुम तुम्हारा काम करोगी ईमानदारी से, तो एक समय आएगा; कोशिश तो करना है। सबके साथ मिलकर रहना चाहोगी और रिश्तों को बनाए रखो। अच्छे से करो सब कुछ अच्छा हो जाएगा।

आशीर्वचन पत्र

शोध छात्रा शमीना टी के शोध कार्य पर टिपण्णी
विषय-(चन्द्र कान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप)
शोध निर्देशिका : डॉ शोभना कोलकाडन !

मुझे प्रसन्नता है कि शमीना टी ने स्त्री स्वत्व जैसे ज्वलंत विषय पर शोध करने के लिए मेरे उपन्यासों को चुना है ।तेज़ी से परिवर्तित हो रहे आज के समय में जब स्त्रियों के सोच स्थिति,और जीवन शैली में काफ़ी बदलाव आए हैं , क़ानून ने स्त्री को पुरुष के समान अधिकार दिएहैं , शिक्षा , प्रॉपर्टी,आदि क्षेत्रों में स्त्रियाँ बराबर सक्रिय है। तब भी पुरुष वर्चस्व प्रधान समाज उसे बराबरी का अधिकार देने में कोताही कर रहा है। तमाम प्रगति के बावजूद ,घर -परिवार से लेकर सामाजिक-प्रशासनिक , हर क्षेत्र में चेतना संपन्न स्त्री अपने स्वत्व, अपनी अस्मिता को प्रमाणित करने के लिये बराबर संघर्ष कर रही है ।आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य में स्त्री अस्मिता की कितनी कद्र है,इसका शमीना ने गहरायी से अध्ययन किया है ।बदलते संदर्भों में उपन्यासों में वर्णित स्त्री पात्रों की जीवन शैली ,विचारधारा और स्त्री संबंधी रूढ़ अवधारणाओं का विरोध ,गहरी अंतर्दृष्टि और स्त्री स्वत्व के आलोक में देख कर विश्लेषित करने का प्रयास किया है।कई उपन्यासों में आतंकवाद के कारण पीड़ित और प्रताड़ित स्त्रियों की मन:स्थिति ,साहस और विरोध की आवाज़ का शमीना ने यथार्थ के धरातल पर आकलन किया है ।स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का श्रम पूर्वक अनुसंधान कर शमीना ने महत्वपूर्ण कार्य किया है ।मैं शमीना और उनकी शोध निर्देशिका को इस श्रम साध्य कार्य के लिए प्रशंसा करती हूँ ।उन्हें मेरा स्नेह भरा आशीर्वाद ।

चन्द्रकान्ता
April 2024
H N- 3020, secter -23
Gurgaon- 122017
—-+———————

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women
(Deemed to be University Estd. u/s 3 of UGC Act 1956, Category 'A' by MHRDRe-accredited with A++ Grade by NAAC, CGPA 3.65/4, Category I by UGC
Coimbatore - 641 043, Tamil Nadu, India

Appendix L2

(Item No 5 of Check List)

Details of Research Publications

Sl. No	Article	Journal	Other Details Vol/No/Page No/ Year	Published in UGC-CARE / Scopus Indexed/ Web of Science
1	स्त्री स्वत्व के विशेष संदर्भ में 'अर्थान्तर' उपन्यास - एक अवलोकन	बहुरि नहिं आवना (त्रैमासिक)	ISSN: 2320-7604 Vol: 25 October 21, Part- 1 Serial No: 143 Page No: 91- 94 Year: Oct- Dec - 2023	UGC-CARE GROUP - I
2	'बाकी सब खैरियत है' में स्त्री स्वत्व के विविध रूप- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	बहुरि नहिं आवना (त्रैमासिक)	ISSN: 2320-7604 Vol: 26 Part- 1 Serial No: 143 Page No: 202- 205 Year: Jan- Mar - 2024	UGC-CARE GROUP - I

*Proof of list of Journals from Internet to be attached along with copies of reprints.

Scholar : Shameena T

Supervisor : Dr. Shobhana Kokkadan

Checked By: 4.4.2024

HoD/Dean of Respective School

The scholar Miss. Shameena, T. (20PHHIF001) has published her articles in the following journal:

1. Bahuri Nahi Awara – is indexed and active in UGC Care Group I from october 2021 to present.

This may be considered.

T. Shameena
08.04.24

स्त्री स्वत्व के विशेष संदर्भ में 'अर्थान्तर' उपन्यास–एक अवलोकन

–शमीना टी.
–डा. शोभना कोक्काडन

सारांश

मानव समाज के पौराणिक काल से ही स्त्री अनेक संघर्षों को पार कर अपने स्वत्व की तलाश में भटकती रही है। वैदिक काल में स्त्री को पुरुष के साथ स्थान मिला था। बाद में पुरुष वर्चस्ववादी वा पुरुषसत्तात्मक मानसिकता ने स्त्रियों को मात्र एक भोग वस्तु माना। प्रथम विश्व युद्ध के समय से ही स्त्री की मानवाधिकारों को लेकर चर्चाएं उभरीं। लेकिन स्त्रीवादी एवं समाजवादी आंदोलन के पश्चात आज भी स्त्री अपनी स्वत्व की खोज में है।

प्रस्तावना

आधुनिक महिला उपन्यासकारों में प्रगतिशील एवं सशक्त लेखिका चन्द्रकान्ता का स्थान सर्वश्रेष्ठ एवं उल्लेखनीय है। कश्मीर में जन्मी अहिंदी भाषी हिन्दी साहित्य साधिका के रूप में उनका स्थान अद्वितीय है। उन्होंने समसामयिक परिप्रेक्ष्य में घटित नारी समस्याओं एवं संघर्षों को अवगत कराने हेतु अपनी तूलिका चलाई। चंद्रकान्ता का पहला समस्या प्रधान लघु उपन्यास है 'अर्थान्तर'। इसमें मानवजीवन की विभिन्न अनुभूतियों तथा मानवजीवन को कलुषित बनाने वाली मानवृत विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित किया है। उन्होंने स्त्री स्वत्व का वर्णन प्रभावोत्पादक एवं कलात्मक इसमें मानवजीवन की विभिन्न अनुभूतियों तथा मानवजीवन को कलुषित बनाने वाली मानवृत विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित किया है। उन्होंने स्त्री स्वत्व का वर्णन प्रभावोत्पादक एवं कलात्मक ढंग से किया है।

वर्तमान युग के दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। पहले के जमाने में सिर्फ पति प्रमुख था। पुरुष को दाम्पत्य जीवन का एक सम्पूर्ण रक्षक एवं अधिकारी माना जाता था। स्त्री को सिर्फ एक गौण पात्र एवं भोग की वस्तु माना

जाता था। पुरुषसत्तात्मक आधिपत्यों में फंसे नारी अपने को चार दीवारों के अंदर बांधना नहीं चाहती थी। स्त्री का अपना अस्तित्व किसी भी क्षेत्र में नहीं था। लेकिन आज की स्त्री अपनी अस्तित्व की खोज में है। पत्नी अब पति की दासी न रहकर जीवनसाथी, सहयोगी, मित्र, प्रियतमा के रूप में समाज के समक्ष अवतरित हुई है। पत्नी भी पति की तरह स्वतंत्रता चाहती है।

पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति समर्पित एवं प्रमाणिक होने से ही दाम्पत्य संबंध में मधुरता एवं दृढ़ता होती है। पति-पत्नी के बीच में छोटी-छोटी बातों में असमानता होती है। लेकिन वैवाहिक जीवन में शांत वा स्वस्थ दाम्पत्य बनाए रखने केलिए रिश्तों में सामंजस्य लाना अनिवार्य है। ''पति-पत्नी में सामंजस्य हो तो वैवाहिक जीवन सुख-शांतिपूर्ण बन जाता है।''[1]

अर्थान्तर उपन्यास में चंद्रकांता ने महिलाओं की मानसिकता और विवाहेत्तर अवैध रिश्तों से टूटे गए पारिवारिक विघटन को दर्शाया गया है। दाम्पत्य जीवन में कई प्रकार के कारणों से दाम्पत्य संबंध विघटित हो जाता है जिसमें प्रमुख है वैवाहिक अवैध संबंध। उपन्यास की नायिका कामिनी उर्फ कम्मो एक मध्यवर्गीय संस्कार सम्पन्न परिवार में पली-बड़ी युवती है। वह बचपन में ही माँ और मामा द्वारा परंपरागत विचार एवं संस्कार में रहने वाली है। वह अपने जीवन में सती-सावित्री जैसा व्यवहार एवं जिंदगी को चाहती है। लेकिन कम्मो की शादी आधुनिक विचार वाले विजय के साथ होती है। विजय एक बिजनेस मैन है। वह अपने जीवन में पैसे को अधिक महत्व देता है।

विजय के विवाहपूर्व और विवाहेत्तर अवैध संबंध है। वह एक ही समय में अनेक अनैतिक संबंध रखता है। विजय-कम्मो की शादी के दिन सुहागरात से पहले विजय और पड़ोस में रहनेवाली बुआ तारा की बेटी ऊषा के साथ घटी एक घटना को देखकर कम्मो को सिर्फ आघात ही नहीं बल्कि वैवाहिक जीवन की पवित्र संबन्धों का विश्वास भी टूट हो जाता है। कम्मो ने गलियारे के नीम अंधेरे में अपने पति और ऊषा को खड़े होकर देखा। उषा विजय से कहती है, ''तेरी दुल्हन के बदले मेरा दिल धड़क रहा है। देखो तो।''[2] यह कहकर उषा ने विजय के दोनों हाथों को खींचकर अपने उभारों पर रख लिया। यह देखकर कम्मो एकदम स्तब्ध हो जाती है।

कम्मो सोचती है, ''कम्मो विजय को कैसे बताए कि उस रात उसके एक मासूम विश्वास का कत्ल हुआ था। उसी ने राखी के स्नेहिल धागों का मजाक उड़ाया था, जिसे वह समग्र चेतना और अंतरंगता से मान देती आई है।''[3] यदि उषा विजय की बहन न होती तो शायद इस घटना को कम्मो नजरअंदाज करती।

कुंवारी के सपने, मीठे सहम भरी उत्सुकताएं, जिंदगी की आकांक्षाएं सब चूर-चूर हो जाती है। उसकी सभी कोमल भावनाएं एवं आकांक्षाएं वैवाहिक जीवन की कुछ पल की शुरूआत में ही समाप्त हो जाती है। पत्थर की मूरत जैसी बन जाती है। रात भर एक प्रतिमा की तरह सामने बैठी कम्मो को देखकर विजय आश्चर्य हो जाता है। कम्मो महसूस करती है कि रिश्तों में पवित्रता बनाए रखने और रिश्तों की मूल्यों को मानने में उषा तत्पर नहीं है। कम्मो को खुद महसूस हुआ कि जिस परिवार से वह जुड़ी है उस परिवार में कोई भी इन बातों को महत्व देता ही नहीं। यहाँ लेखिका ने विजय और कम्मो के विवाहोत्तर संबंध से हुए त्रासदीपूर्ण जीवन को चित्रित किया है।

विवाह के पश्चात अगर पति-पत्नी के बीच में आत्मसमर्पण, वैचारिक एकता और सौहार्दता का अभाव हो तो सफल दाम्पत्य संबंध बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। साथ ही साथ यह संबंध सिर्फ असफल न होकर तनाव का एक कारण भी बन जाता है। विजय अपनी पत्नी से सिर्फ दैहिक संबंध चाहता था। लेखिका ने लिखा है, ''कम्मो उस सुविधा का अंगमात्र थी, जिसका विजय अपने मूड के अनुसार उपयोग करता था।''[4] इसके फलस्वरूप जिंदगी में कम्मो को अकेलापन और तनावग्रस्त महसूस होने लगा। वह भी अपनी जिंदगी में स्वतंत्रता चाहती है। वह हमेशा अपनी स्वतंत्रता के अस्तित्व की खोज में लगी रहती है। शादी के आठ दिन पश्चात ही पति नौकरी के सिलसिले में मुंबई चला जाता है। यहाँ कम्मो को चोट लगती है। वह कम्मो को साथ ले जाने को तत्पर नहीं था। इसी आघात में वह स्वत्व की खोज करने का प्रयास करती है।

विवाह के कुछ महीने पश्चात विजय की फाइलें साफ करते समय कम्मो को जूली और विजय की एक फोटो मिलती है। कम्मो को मालूम हो जाता है कि विजय का अवैध संबंध सिर्फ उषा से ही नहीं बल्कि जूली जैसी अन्य स्त्रियों से भी है, जिसके कारण वह अपने पति के साथ तन-मन से तालमेल एवं समर्पण नहीं रख पाती। वह अपने परंपरागत विचार और संस्कृति को मन में उमड़ती भावनाओं से मेल नहीं कर पाती।

कम्मो, पति विजय से अपने लिए अधिक वक्त न दे पाने की शिकायत करती है, ''मगर तुम्हारे बिजनेस के मारे तो मेरी रातों की नींद भी गायब होती जा रही है।''[5] कम्मों पढ़ी-लिखी संस्कार सम्पन्न मध्यवर्गीय युवती है। वह अपने

को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। इसलिए वह शादी के बाद की अकेलेपन को दूर करने हेतु दूसरे शहर जाकर अकेली रहना चाहती है। वह मात्र पत्नी बनकर ससुराल में नहीं रहना चाहती थी, विशेषकर पति की अनुपस्थिति में। वह जीना चाहती है स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश में। लेकिन उसके इस सोच-विचार और निर्णय से सास-ससुर, माँ-बाबू जी सहमत नहीं थे। लेकिन वह अपने निर्णय के प्रति अटल रहे। ''कम्मों एक बार फिर जिद पर आ गई। पराश्रित होकर कम्मो जीना न चाहेगी। माँ ने दलीलें दीं, सास जी ने लक्ष्मण रेखाओं की ओर संकेत किया। कम्मो फिर भी न झुकी।''[6] वह अध्यापिका बनकर अपना अस्तित्व की खोज में जीना चाहती थी।

यह दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न समस्याओं पर आधारित उपन्यास है। यहाँ लेखिका ने दाम्पत्य जीवन के खोखलेपन तथा मानवीय विघटन की त्रासदी को ठीक तरीके से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। नायिका कम्मो विश्वास के क्षय के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं से पीड़ितग्रस्त है। वैवाहिक जीवन की शुरूआत के दिन में ही विश्वास को ठोकर लगाना तत्पश्चात पति का अपने बिजनेस में खो जाना, इससे पति-पत्नी के सम्बन्धों में अंतर आ जाता है। यह दोनों में तनाव बढ़ने का कारण हो जाता है। इसी तनाव के कारण कम्मो सहध्यापक सत्य की ओर आकृष्ट हो जाती है, उसे चाहती है'' अनेक संशयों के बीच कांपते-सहमते भी कम्मो ने उस स्पर्श को पूरे मन से स्वीकार लिया। ''कम्मो ने उस सैलाब को अपने भीतर सोखना चाहा।''[7]

कम्मो, सत्य शर्मा के संपर्क में आती है जो एक अवसरवादी स्वार्थी व्यक्ति है। वह कम्मो के अकेलेपन का फायदा उठा लेता है और बाद में उसे निरंतर टालता रहता है और अंत में यही कहता है, ''तुम्हारी चाह अधूरी थी, कम्मो।''[8] वह सत्य के प्रति अपने मानसिक एवं शारीरिक द्वंद के कारण आकर्षित होती है। वह एक ओर सत्य के प्रति अपने को पूर्णतः समर्पित होना चाहती है तो दूसरी ओर फिर से मन में द्वंद उभर कर आता है। अपनी जिंदगी में पूरी तरफ से उलझन महसूस होने लगती है। आखिरकार, जिंदगी में एक प्रकार की अधूरापन ही रह गया है। ''रात तकिए पर सिर रखते ही कम्मो के गले का मंगलसूत्र छाती में गड़ता गया। छाती से हटाया तो गले को रेतने लगा। अंधेरे में भयानक आँखें उसे बींधने लगीं। न जाने कहाँ से आकर फन उठाए नाग डंसने के लिए झटपटने लगे। शोर रले-मिले स्वर, अस्पष्ट अनुगूंजे। कम्मो ने कान बंद कर लिए। फिर भी पूरी रात वह क्रॉस पर लटकती रही और कम्मो कोई भी निर्णय न ले सकी।''[9]

पति की अनुपस्थिति में वह पूरी तरफ से अकेली थी। कम्मो में स्थित मानसिक द्वंद सत्य के कथन से अधिक स्पष्ट हो जाता है, ''जुबान से कुछ बदलने, कुछ तोड़ने की बात करना सरल होता है कम्मो। मैं जानता हूं, एक निरर्थक से अनचाहे बंधन को तुम उम्र भर स्वयं अस्वीकार करती रहोगी।''[10] इसी मानसिक द्वंद के कारण कम्मो न पति से जुड़ पाती है, न सत्य और न ही प्रशांत से।

इस उमड़ते मानसिक अकेलेपन एवं द्वंद के फलस्वरूप वह पति होते हुये भी प्रशांत को भी चाहती है और जबर्दस्त रिश्ता बनाती है। लेकिन उसमें भी वह संतृप्त नहीं थी, कहीं-कहीं उसे संदिग्धता महसूस होने लगती है। ''कम्मो प्रशांत को चाहती है पर उसे कभी नहीं कहती कि कम्मो अकेले कोनों को सह नहीं पाती। उसे भीड़ में ही रहने दो प्रशांत!''[11] प्रशांत की ओर आकर्षित होकर रात दस बजे प्रशांत को फोन करके बुलाती है। 'कह दिया न बात करने का मन है। चले आओ।' 'कहाँ ?' 'मेरे घर पर। अकेली हूं'।[12] कम्मो पूर्णता की चाहत में अन्य पुरुषों की ओर आकर्षित होती है।

कम्मो सत्य और प्रशांत के साथ अवैध संबंध रखने का मुख्य कारण पति पर निर्भरता है। वैवाहिक जिंदगी की पहले दिन में हुई घटना से कम्मो का दिल टूट गया है। अपने टूटन को जोड़ने हेतु और अकेलेपन को दूर करने हेतु वह सत्य से प्यार करती है। सत्य कहता है, ''तुम्हारे सिवा कम्मो, तुम्हारे सिवा। मुझे और कुछ नहीं चाहिए, कुछ नहीं।''[13]

विवाहपूर्व संबंध

उषी और विजय के बीच में विवाह पूर्व वासनात्मक संबंध है। रिश्ते से विजय की बहिन है उषी, लेकिन वह रिश्तों के मूल्यों को पवित्र नहीं माना है। इसी प्रकार विजय और जूली भी विवाहपूर्व संबंध रखते हैं।

विवाहेतर संबंध

उषी की माँ तारा बुआ स्वार्थवश विवाहेतर संबंध रखती है। तारा अपने पति के बचपन के दोस्त पुष्कर से अवैध सम्बंध रखती है। बेटी उषी मना करने पर भी वह रिश्ता नहीं छोड़ती बल्कि अवैध सम्बंध को आगे बढ़ाती है। मतलब ''तारा बुआ सम्पूर्ण जिंदगी चाहती थी, अपनी औसत जिंदगी असमय बुढ़ापे पति और समय से पूर्व जवान होते तीन बच्चों के बीच।''[14] इसके लिए उसे पुष्कर का आश्रय अनिवार्य माना। यह उषी और माँ के बीच में हुआ संवाद में द्रष्टव्य है।

'दीवारों के पलस्तर उखड़ रहे हैं। बरसात में क्या होगा ?' 'तेरे अंकल से बात करूंगी, किसी कारीगर को भेज देंगे।' 'माँ, अंकल गई रात तक घर नहीं जाते। पड़ोसवाले बातें करते हैं।' 'बेटा आज मसालेदार मटन बनाना। तुम्हारे बाबूजी को सर्दी की शिकायत है।' 'माँ मैं अंकल की बात कर रही हूं।' 'उषी तुम्हारे बाबू के कफ में खून के जर्रे है। यह देखना ज्यादा जरूरी है।''[15] यहाँ उषी की माँ परिवार को चलाने हेतु अंकल से शारीरिक संबंध रखती है और घर के आवश्यकताओं को पूरा करती है। पति का इलाज भी अंकल द्वारा ही करती है।

नगरोन्मुख नारी

शादी के कुछ समय बाद कम्मो और विजय दोनों छोटे शहर से महानगर में आ चुके हैं। वे पूरी तरह से महानगरीय व्यस्त और गतिमान जिंदगी जीते हैं। यहाँ के लोग एक-दूसरे को अजनबी और अपने-अपने दायरों में कैद महसूस होते हैं। इसी अजनबीपन से किसी को न बाहर आने की इच्छा है, न बात करने का समय। कम्मो कहती है, ''पड़ोस में कोई जन्म लेता तो लाखों करोड़ों में एक और की वृद्धि हुई। जान लोग अधिक-से-अधिक नाक भौं सिकोड़कर टीकों की चर्चा भर करते, कोई मर जाता तो चार दिन बाद पड़ोसी जान जाता कि उसके पास दवाई के लिए पैसे नहीं थे। सामने झोपड़ पट्टियों में रोना-चीखना, गाली-गलौच निरंतर कुछ-न-कुछ चलता रहता। किसी की बेटी धंधा करती, किसी की बीवी। कोई पॉकेट मारकर परिवार का पोषण करता, कोई हाड़तोड़ मजूरी कर। 'किसी को क्या फर्क पड़ता है 'वाली बस्ती में सभी केवल साँस को बरकरार रखने में व्यस्त।'' [16] तनावग्रस्त जिंदगी के बारे में लेखिका कहती है, ''संपूर्णता? कहाँ होती है संपूर्णता? चाहे-अनचाहे किस संबंध में? कम्मो खंडों में बंटकर भी जिएगी, क्योंकि जीना हर स्थिति में महत्वपूर्ण होता है।''[17]

निष्कर्ष

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने महानगरीय लोगों की जिंदगी की गतिविधियों, कुंठाओं, असंतोषों का अंकन यहाँ पर सही ढंग से किया है। यह एक समस्या प्रधान लघु उपन्यास है, इसमें मध्यवर्गीय परिवार की वैवाहिक जीवन में आए खोखलेपन, टकराहट, मानसिक द्वंदों का सही चित्रण किया गया है। इसमें चंद्रकांता जी ने आधुनिक नारी की द्वंद्वग्रस्त मनः स्थिति और जीवन शैली का सराहनीय वर्णन करने के साथ-साथ अवैध संबंधों का भी उल्लेख किया गया है। मानवजीवन की विभिन्न अनुभूतियों तथा मानवजीवन को कलुषित बनाने वाली विभिन्न मानवृत एवं अन्य समस्याओं को मार्मिक प्रभावोत्पादक एवं कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने में उनका रचना कौशल अत्यंत सराहनीय है। चंद्रकांता जी की रचनाएँ व्यक्ति, समाज और देश के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का ठोस प्रमाण सिद्ध हुई हैं। चंद्रकान्ता के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं विभिन्न धर्म और जातियों के समन्वय भावना का वर्णन हमें देखने को मिलते हैं।

पारिवारिक जीवन की दुर्दशा का मुख्य कारण है व्यावहारिक जीवन की शिक्षा का अभाव। चंद्रकांता के उपन्यास अर्थान्तर में प्रतिबिम्बित हर एक छोटी-बड़ी समस्याओं का वर्णन संदर्भोचित, स्वाभाविक एवं प्रभावी ढंग से हुआ है। उनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, समस्याएं प्रमुख रूप से उभरकर सामने आई हैं। समाज के विस्तृत फलक के अंतर्गत के पारिवारिक जीवन, विवाह, नारी समस्याएं, नारी शोषण, अविवाहित नारी की मानसिक व्यथा जैसी मुख्य समस्याओं को सूक्ष्माति सूक्ष्म अंकन किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डा. पद्मा चामले, आधुनिक हिन्दी कहानियों में युवा मानसिकता, पृ. 54
2. अर्थान्तर, चंद्रकान्ता, अमन प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, कानपुर, उत्तर प्रदेश, 2020, पृ. 29
3. वही, पृ. 30
4. वही, पृ. 59
5. वही, पृ. 56
6. वही, पृ. 53
7. वही, पृ. 49
8. वही, पृ. 50
9. वही, पृ. 49
10. वही, पृ. 50
11. वही, पृ. 39
12. वही, पृ. 72
13. वही, पृ. 49
14. वही पृ. 26
15. वही, पृ. 27
16. वही, पृ. 59
17. वही, पृ. 79

शमीना. टी (शोधार्थी)
और **डा. शोभना कोक्काडन** (शोध निर्देशिका)
हिन्दी विभाग
अविनाशिलिंगम इंस्टीट्यूट फॉर होम साइन्स
एंड हायर एडुकेशन फॉर वुमेन
कोयम्बत्तूर, तमिलनाडु

'बाकी सब खैरियत है' में स्त्री स्वत्व के विविध रूप एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

—षमीना. टी
—डॉ. शोभना कोक्काडन

सारांश— इक्कीसवीं सदी के ख्याति प्राप्त कश्मीर में जन्मी अहिन्दी भाषी हिन्दी साहित्य साधिका के रूप में महिला लेखिका चन्द्रकान्ता का स्थान अद्वितीय है। उन्होंने अपने सृजनकार्य द्वारा समसामयिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री द्वारा भोगे हुए संघर्षों, कुरीतियों, त्रासदियों, विसंगतियों, कुंठाओं, संघर्षशील उदासीन स्त्रियों के द्वंद्वों, आत्मसम्मानहीन स्त्री के विविध परिवर्तनों एवं अस्तित्वहीनताओं को समाज के समक्ष अवगत कराने हेतु अपनी तूलिका चलाई।

बीज शब्द : अस्तित्व, संघर्ष, आत्मसम्मान, अंर्तद्वंद्, अवैध सम्बन्ध, मूल्य विघटन

प्रस्तावना—आधुनिक हिन्दी साहित्य की एक विशिष्ट ख्यातिप्राप्त सशक्त साहित्य साधिका के रूप प्रशंसनीय लेखिका चन्द्रकान्ता ने 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास के माध्यम से मानव जीवन की विभिन्न अनुभूतियों तथा मानव जीवन को कलुषित बनाने वाली मानवकृत विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित किया है। उन्होनें स्त्री स्वत्व के विविध रूपों एवं संघर्षरत स्त्रियों की अस्तित्वहीनता को प्रभावोत्पादक एवं कलात्मक ढंग से उजागर किया है। चन्द्रकान्ता ने अपने भोगे हुए यथार्थ के द्वारा समाज में घटित स्त्री की पीड़ाओं को समझकर उसे न्याय देने का प्रयास किया है। उन्होंने सामाजिक प्रतिबद्धता, मानवीय मूल्य-दृष्टि एवं मानवीय संवेदना से परिचालित होकर समाज में घटित तत्कालीन समस्याओं और विसंगतियों को अवगत कराने में खुद अभि प्रेरित चेतना दिखाई। उन्होंने अपने लेखन कौशल के माध्यम से स्त्री के मन की अंर्तद्वंद्वों, सच्चाईयों, खुद भोगे हुए कटु अनुभवों एवं तदयुगीन समाज में घटित विभिन्न प्रकार की नकारात्मक परिस्थियों, विसंगतियों एवं अवस्थाओं पर प्रकाश डाला। एक दायित्वपूर्ण लेखिका की भूमिका ईमानदारी से निभाने के नाते स्त्री के युगीन समस्याओं, स्त्री स्वत्व के विविध रूपों और अस्तित्वहीन स्त्रियों की आत्मसम्मानहीनता के कारणों को भी दर्शाने का प्रयास किया है।

एक आदर्शवादी यथार्थवादी लेखिका के रूप में मानवीय सम्बन्धों पर विघटित मूल्यों को समाज के समक्ष अभिव्यक्त करने में उनका रचना कौशल सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। उन्होनें समकालीन जीवन की बदलते मानवीय रिश्तों के बिखराव, आधुनिक विचारधारा से टूटे पारिवारिक सम्बन्धों, विसंगतियों एवं विद्रूपताओं, वैवाहिक जीवन के अवैध शारीरिक सम्बन्धों से त्रस्त एवं अस्तित्वहीन स्त्रियों के विघटित मूल्यों तथा अव्यवस्थित दुर्दशा के परिणामों को अपना लेखन का विषय बनाया। उन्होंने वही लिखा जो खुद भोगा और जो दूसरों को भोगते देखा, महसूस किया। ''महिला हूँ, पर लेखन खुद महिला समझकर नहीं किया। महिला-लेखन, पुरुष लेखन जैसी चीज मैं मानती नहीं।''[1] स्त्री को वे पारिवारिक सृष्टि में सक्षम, एक प्रयत्नशील तथा विवेकशील सामाजिक और अपने अधिकार कर्तव्यों के प्रति सजग एवं सक्रिय प्राणी मानती हैं। स्त्री-पुरुष के समान हकदार को एक सटीक नीति व्यवस्था मानती है।

सन् 1983 में प्रकाशित 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार के मानसिकता तथा सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बदलते अवमूल्य मानवीय सम्बन्धों को परखा है। एक संयुक्त परिवार के मध्यवर्गीय जीवन में आर्थिक समस्याओं की भूमिका को स्पष्ट करने वाला उपन्यास है 'बाकी सब खैरियत है'। प्रस्तुत उपन्यास में आर्थिक संतुलन के अभाव से त्रस्त पारिवारिक मूल्य विघटन की मानवीय सम्बन्धों को दर्शाने के साथ अपने पुत्रों की आर्थिक स्थिति को महत्व देकर तथानुरूप सम्बन्धों का निर्वाह करनेवाला माता-पिता के स्वभाव से उत्पन्न समस्याओं को भी चित्रित किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में संस्कारशील स्त्री पात्र 'पारुल' रूढ़ परम्पराओं से ग्रस्त परिवार में अपना व्यक्तित्व विकास करने में सक्षम नहीं है। बेटी ऋता मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार की नयी पीढ़ी के युवती की भूमिका निभाती है। पुरुष पात्र अनु पाश्चात्य रंग से प्रभावित है। समाज में रहे महत्वाकांक्षी व्यक्ति का रूप अनु में देखने को मिलता है। 'विनु' संयुक्त परिवार की विभिन्न समस्याओं से जूझने वाला पात्र है। एक साधारण सी नौकरी करता है और साल भर में एक-दो महीने की छुट्टी पर आता है। छोटा लड़का पढ़-लिखकर डॉक्टर बनता है। अनु को

जब विदेश में पैसों की जरूरत थी, तब एक दोस्त ने उसकी मदद की। आर्थिक अभाव के कारण अपने माता-पिता और छोटे भाई की तीव्र उपेक्षा के शिकार बनकर विनु व्यथित होता जाता है और उस परिवार में विनु और पारुल अपमानित होकर संघर्षहीन जीवन व्यतीत करते हैं। ''पारुल सीमाओं की ही बात जानती है। उसके परिवेश ने शुरू से ही उसको सिमटने पर मजबूर किया है, हजारों-हजार लक्ष्मण रेखाएं खींचकर। कोई ताज्जुब नहीं कि एक दिन वह इतना सिकुड़ जाए कि छोटे से कीड़े-मकोड़े में समा जाये और स्वयं भी अपने आप को पहचान न सके।''[2] पारुल अपना मनचाहा घर कभी न बसा पाई। वह घर के परिवेश और परिस्थितियों में पति, सास-ससुर, देवर तथा बच्चे सहित कुंठित है। परन्तु वह परम्पराओं और संस्कारों से जकड़ी हुई थी। इसी कारण वह ऐसा कोई निर्णय नहीं ले सकी जिससे उसके सास-ससुर को कोई कष्ट पहुंचे। पारुल को अपने बच्चों का विद्रोह उचित लगने पर भी उसे शान्त कर देती है। बेटी की बात पर विचार करते हुए पारुल काँप गयी।" उम्र-भर बड़ों के आगे सिर झुकाकर, एक निर्देशित लीक पर चलने के सिवा उसने किया भी क्या है? अपनी कोई पहचान बना सकी है वह? परम्परा के निर्वाह, घर की झूठी इज्जत और बुजुर्गों के अहं को सिर-माथे धरकर वह घर-परिवार की मशीन का एक पुर्जा-मात्र बनकर ही तो घिसती रही। बेटी से उसने इतना ही कहा, मैंने तो हमेशा अपना कर्तव्य निभाया ऋतु।''[3] विदेश में सभी सुख सुविधाओं से परिपूर्ण जीवन का आनंद उपभोग करने के कारण अनु का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है। प्रेमिका 'सीमा' से चोट खाने पर उसने भाभी से कहा था कि जो लड़की पसंद आए उससे वह शादी करेगा। पारुल ने उसके लिए टिपिकल यू.पी. ढूँढ़ी। लम्बी चोटी और गर्दन से ऐड़ी तक साड़ी-ब्लाउज, पर जब वह कैनेडा गयी तो उसका रूप ही बदल गया। अनु जब से विदेश गया तब से उसकी सोच बदल गयी। उसका कहना था कि अरेंज्ड मैरेज क्यों जरूरी है?" क्यों अभी भी तुम लड़के-लड़की को अपनी जिन्दगी खुद बनाने नहीं देते, अपना साथी खुद चुनने नहीं देते? मैं सोचता हूं, यह अनावश्यक चिन्ता, हमारे बच्चों को कितना गैर जिम्मेदार बनाते हैं। बचपन से लेकर जवानी तक हम उनके लिए रास्ते क्यों बनाते हैं।''[4]

'बाकी सब खैरियत है' की कथा संयुक्त मध्यवर्गीय परिवार की बड़ी बहू पारूल और छोटे देवर अनु के इर्द-गिर्द घूमती है। संस्कारशील परिवार की बेटी पारुल अपनी रुचि को त्याग करके सास-ससुर और परिवार की सेवा में व्यस्त रहती है। महत्वाकांक्षी अन् पाश्चात्य संस्कृति में रंग जाता है। डा. रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है–'' 'बाकी सब खैरियत है' में लेखिका ने यह दिखाने का प्रयन्त किया है कि एक संयुक्त परिवार में छोटा भाई विदेश जाकर आज की उपभोगवादी संस्कृति में इतना रंग जाता है कि सारे पारिवारिक मूल्यों को ताक पर रखकर अपने माँ-बाप, भाई-भाभी सभी से भावनात्मक स्तर पर अपने को अलग कर लेता है।''[5] सास और बहू के सम्बन्धों का इस उपन्यास में यथार्थ चित्रण पाया जाता है। अभावग्रस्त जीवन बिताने वाले बड़े बेटे की तुलना विदेशों में सुखमय जीवन बिताने वाले अपने छोटे बेटे से करने वाले माता-पिता द्वारा विनू और पारुल कुंठित एवं अपमानित होते हैं। पारुल जैसी हजारों स्त्रियाँ जो अन्त तक अपने मन से जी नहीं सकतीं। बड़े-बूढ़ों की पीढ़ी अंतिम दम तक अपने ढंग से ही जीना चाहती है जिन्हें उपन्यास समर्पित है।

सामाजिक विचारधारा में प्रगतिशील परिवर्तन आना स्वाभाविक है जिससे विचारों के विशिष्ट पद्धति के वातानुकूल तदयुगीन आदर्शों पर नया प्रभाव पड़ता है। स्वतंत्रता काल में जिन आदर्शों एवं मानवीय मूल्यों को तदयुगीन सामाजिक विकास के मानदण्ड माना था, आज पीछे जा चुके हैं। परन्तु कई ऐसे प्राचीन मूल्य है जो आज भी समाज में स्वीकार्य हैं जिससे सामाजिक बंधनों एवं कुप्रथाओं में स्त्री जकड़ी हुई है। न उसे पढ़ने-लिखने का मौका है, न घर से बाहर जाने की अनुमति या इजाजत है और न अपने अस्तित्व के अनुरूप खुलकर सोचने एवं निर्णय लेने का अवकाश है। अनु की माँ प्राचीन विचारों से प्रभावित है। पारुल की शादी जब हुई थी तब से शुरू हुआ सास का अधिकार, सास उसे इजाजत के बिना घर के बाहर कदम भी नहीं रखने देती थी। सास की पसंद के कपड़े पहनने पड़ते थे और अपने बक्सों-अलमारियों की चाबियाँ सास को देनी पड़ती थी। एक बार बालों को रिबन बाँधकर रिश्तेदार के यहाँ जाने के लिए निकलती है तो सास उस पर गुस्साकर दुबारा बाल बनाने के लिए कहती है और जूड़ा बँधवाने का आदेश देती है। बहू पारुल को जब संगीत के कार्यक्रम हेतु स्टेशन में आमंत्रित किया जाता है तो सास उसका विरोध करती है। बेटी 'सरो' का उदाहरण देकर कहती है, ''सरो को तो दस जमात के आगे इसी डर से नहीं पढ़ाया कि कालेज में लड़कों के साथ पढ़ना पड़ता है और तुम अब गा-बजाकर पैसे कमाओगी।'' सास प्राचीन मूल्यों को छोड़ नहीं पाती। सास पड़ोस की औरतों के पास बहू की शिकायत करती है, ''एक मैं थी जो सास का सिर जरा-सा दुखता तो घंटों बैठी सिर दबाती। इधर लत्ते दर्द से खींची जा रही है, मगर कोई मलहम तक नहीं लगाता।''[6] पारुल की बच्ची ऋता जब कहा था कि उसके अन्य फ्रेंडस की तरह वह भी 'डेटिंग' चाहती है। तब पारुल को लगा विदेश आकर्षणों की भूल-भुलैया में वह अपनी बेटी को कब तक बचा पाएगा?

बीसवीं सदी के प्रगतिशील नवजागरण काल के

समाज सुधारकों ने स्त्री को विभिन्न बंधनों की साँकलों से मुक्तकर स्त्री स्वातंत्रय या स्त्री मुक्ति का नारा लगाया जिससे स्त्री अपने अधिकार और अस्तित्व के प्रति जागरूक हुई। वह भी पुरुष के समान कंधे-से-कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में अपने स्वत्व को निभाने के लिए कार्यरत हो गई जिससे उसकी हीन भावना नष्ट हो गई, आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान में वृद्धि आयी। स्त्री को उचित सम्मान मिला।'' आधुनिक युग में नारी के सहयोग से विश्व की सृजनात्मक आस्थामूलक पुनर्रचना करने की संभावना ने नारी को पुरुष के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया है।''[7] परंपरागत मूल्यों को उसने बदलने का प्रयत्न किया। आधुनिक नारी प्राचीन परंपराओं का त्याग पूर्णरूप से तो नहीं कर पाई है पर उन पुरानी सड़ी-गली परंपराओं से स्वयं को किसी सीमा तक मुक्त अवश्य करा पाई है।''[8] उपन्यास के पात्र 'निम्मी' अपने ढंग से और स्वतंत्रता से जीना चाहती है, परन्तु सास के साथ विचारों का अनमेल होने से टकराव होने लगता है, तो वह स्पष्टतः जेठानी से कहती है, ''हम अपने सुख-सुविधा छोड़कर इनके लिए कितना कुछ तो करते थे, लेकिन माँ कभी संतुष्ट हुई भाभी! आखिर, इन्हें भी समझना चाहिए कि सभी जीना चाहते हैं। जी चुके लोगों के लिए हम अपनी उगती जिंदगी का गला थोड़े घोंट सकते हैं।''[9] सास बहू पारुल के बक्सों-अलमारियों की चाबी अपने पास लेकर रखती थी, परन्तु निम्मी चाबी सौंपने से विरोध करती है। वह कपड़े भी अपने ढंग से पहनती है। पति को साफ-साफ सुनाती है, ''जो शख्स जमाने से ही नाराज हो, वह जमाने के साथ चलने वाले हर व्यक्ति से नाराज होगा और मेरी समझ में माँ की नाराजगी बिल्कुल नहीं आ सकती, इतना जान लो।''[10] वह किसी भी हाल में पिछड़ना नहीं चाहती है। इसी प्रकार पारुल की बेटी ऋता भी आधुनिक विचारों से प्रेरित दिखाई देती है। वह खुद की अलग पहचान बनाना चाहती है। समझौता उसे अस्वीकार है, जितनी भी जिंदगी मिलेगी वह अपनी सोच के मुताबिक जीना चाहती है। ऋता ने एक बार कहा था, ''चाचा-चाची बहुत अच्छे हैं, मगर वाई डोन्ट दे लीव अस अलोन। हमारे हर काम पर उनके दस्तखत क्यों जरूरी है''?[11] स्त्री आधुनिक प्रगतिशील विचारों के कारण अपने अस्तित्व को पहचानने लगी है। अधिकार और कर्तव्यबोध से भरी होकर कार्यरत होने में सजग हो रही है। अत्याचार और शोषण का सामना करने के लिए वह सिद्ध है। इतना ही नहीं वह अन्य स्त्रियों को भी अन्याय से मुक्ति दिलाने का प्रयास करती है।

लेखिका ने प्रेम एवं विवाह की समस्या का भी गहनता से चित्रण किया है। लेखिका ने विवाह पूर्व प्रेम का निरूपण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि किशोरावस्था में भावनावश किया गया प्रेम का अंत तक निर्वाह नहीं होता। किसी एक का विवाह होने पर प्रेम की वहीं समाप्ति हो जाती है। अनु भावनावश सीमा की ओर आकर्षित होता है। अनु और सीमा दोनों डॉक्टर हैं। एक दूसरे को चाहते भी हैं। परन्तु उसका विवाह एक सम्पन्न घर परिवार में हो जाता है। अपने दर्द को अनु अपनी भाभी को इन शब्दों में व्यक्त करता है, ''जाने दो भाभी! वह सब शायद एकतरफा ही था। सीमा तो सभी के साथ खुलकर बोलने वाली लड़की थी। मैं ही गलत समझ गया। उसने शादी की बात सुनकर साफ कह दिया कि इसका फैसला उसके पिता ही करेंगे और पिताजी गुजराती ब्राह्मण को ज्यादा पसन्द करते थे।''[12] सीमा सुरक्षित होने पर भी स्वयं निर्णय लेने का साहस न कर पाई। वह अपने पारिवारिक परंपरा और मूल्यों को मानने के कारण अनु से विवाह करने में विवश रही। इसलिए इनके प्रेम की स्थिति यही रही। किसी आत्मीय क्षण में दोनों के भीतर उष्णता की लहरें उठी थीं। लेकिन काठ-कंक्रीट के तटों को छूकर बिखरने की नियति लेकर। किसी अवरोध को तोड़ने की शक्ति उनमें न थी। बस, किनारों की रेत-मिट्टी गीली करके वे अपने में सिमट आयी थी। अनु ने शायद तभी से सपने देखने शुरू किए थे। सीमा ने भी तो भरपूर साथ दिया था।''[13]

पारुल की बेटी ऋता उसकी अन्य फ्रेंड्स की तरह वह भी 'डेटिंग' करना चाहती है। 'आय एम ए बिग गर्ल पा' कहकर उसने बाय फ्रेंड्स बनाने की अनुमति माँगने लगी पारुल से।

मनुष्य हमेशा द्वन्द्वात्मक स्थिति से गुजरता है। इस द्वन्द्वात्मक स्थिति के बारें में डॉ. जौहरा अफजल लिखती हैं, ''वह परंपरा और आधुनिकता के बीच फंसकर रह गई है। न तो वह इन संस्कारों को पूर्ण रूप से त्याग पाई, न ही आधुनिकता को सम्पूर्ण रूप से अपना सकी है।''[14] उसका यह द्वन्द्व बदलते परिवेश के कारण जितना बन चुका है उतना ही भावुक स्वभाव और पुरुषों के समान जीने की लालसा के कारण भी। उसके व्यक्तित्व के नारी के द्वन्द्व की यह स्थिति उभरी है जहाँ उसने अपने व्यक्तित्व के निर्माण के निमित्त विचार और भावना का संतुलित ढंग से उपयोग किया है और जीवन को अपनी इच्छानुरूप जीना चाहा है। विचार और भावना का द्वन्द्व में कभी विचार प्रमुख हो उठे हैं और कभी भावना।''[15] पारुल में हमेशा कुछ करने, बनने की ललक है। वह संगीत, चित्रकला जैसे माध्यमों से अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहती है। उसे प्रगतिशील विचारों से प्रेरित होते हुए भी मर्यादाओं, संस्कारों के बीच दबकर चुप बैठने के लिए मजबूर होना पड़ता है, परिणामस्वरूप विचार और भावना का संघर्ष आरंभ होता है। पारुल के भीतर की कोई आवाज उसे डाँटने लगती है, तुम अपने कान बंद कर लिए। तुम्हारे भीतर की हौंस, कोई आवाज तुम सुन-समझ नहीं पाई।

तुमने आँख बंद की कि तुम अपने भीतर बनते विराट चित्रों को देख न सकी। तुम्हारे भीतर पंख फड़फड़ाते एक नन्हा पाखी उन्मुक्त आकाश में उड़ान भरना चाहता था, तुमने सभी दरवाजें-खिड़कियाँ बंद कर ली। तुम उसकी घुटन भारी मौत की जिम्मेदार हो।''[16]

बेटा अनु जब माता-पिता को विदेश लेकर गया, तब आरंभ में वहाँ की चकाचौंध और वैभव को देखकर वे अतिप्रसन्न होते हैं। परन्तु 'जनरेशन गैप' के कारण वे कुछ दिनों में भी अपनी जबान और बर्ताव से उनका दिल तोड़ देते हैं। उनका कहना था, ''जी चुके लोगों के लिए हम अपनी अगती हुई जिन्दगी का गला थोड़े ही घोंट सकते हैं?''[17] पारुल की जिन्दगी के हर रुकावटों का कारण एक ही स्त्री है उसकी सास जो हर क्षण में अपने विचारधाराओं के अनुकूल ही सोचती है, निर्णय लेती है। वह अपनी बड़ी बहू के खिलाफ ही ज्यादातर अनैतिक प्राचीन आदर्शों को लेकर सामने आती है। पारुल जैसी हजारों नारियाँ हैं जो अन्त तक अपने मन से जी नहीं सकतीं। सास ने बहू निम्मी को बाल काटने के कारण उसे बार-बार परकटी कहना, अलमारियों की चाभियाँ माँगना, पैडिडब्रा को छूकर पूछताछ करना, ससुर से बात करने पर शक करना निम्मी को बिल्कुल पसंद नहीं था। अपनी सास को देखकर, निम्मी को हमेशा गुजरे जमाने का कोई नायाब नमूना अकबरी लोटा या नूरजहाँ का दुशाला याद आता, जिसे एंटीको में शुमार करके घर में सजाया जा सकता है''[18] सास कहती है, ''ये आजकल की ये छोकरियाँ अदब सलीका क्या जानें? लिहाज शर्म क्या समझें! आँखों का पानी तो मर गया है। बहू तो पारूल ही है। बात-लात सहती है, पलटकर नहीं बोलती। आखिर वक्त की बहू है। अगेड़ी-पिछेड़ी में फर्क तो होगा ही।''[19]

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने महानगरीय लोगों के जिंदगी की गतिविधियों, कुंठाओं, असंतोषों का सही अंकन यहाँ पर सही ढंग से किया है। यह ऐसा एक उपन्यास है जिसमें मध्यवर्गीय परिवार की वैवाहिक जीवन में आए खोखलेपन, टकराहट, मानसिक द्वंदों का सही चित्रण है। यहाँ आधुनिक नारी की द्वंद्ग्रस्त मनःस्थिति और जीवन शैली का सराहनीय वर्णन करने के साथ-साथ अवैध संबंध का भी उल्लेख किया गया है। उनकी रचनाएँ व्यक्ति-समाज और देश के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का ठोस प्रमाण सिद्ध हुई हैं। पारिवारिक जीवन, विवाह, स्त्री की समस्याएँ, स्त्री शोषण, अविवाहित स्त्री की मानसिक व्यथा जैसी मुख्य समस्याओं का सूक्ष्म अंकन किया है।

संदर्भ

1. समकालीन महिला लेखन, डा. ओमप्रकाश शर्मा, पृ. 36
2. बाकी सब खैरियत है, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, संस्करण, 1983, पृ. 9
3. वही, पृ. 134
4. वही, पृ. 36
5. हिन्दी उपन्यास, डा. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, ससंकरण, 2006, पृ. 181
6. बाकी सब खैरियत है, पृ. 108
7. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, डा. जे. एम. देसाई, पृ. 186
8. साठोत्तरीकथा-साहित्य में श्रमजीवी नारी, सं.नंदकिशोर मिश्र, भाषा अंक, नवंबर-दिसंबर, 1999, पृ. 78
9. बाकी सब खैरियत है, पृ. 51
10. वही, पृ. 53
11. वही, पृ. 130
12. वही, पृ. 75
13. वही, पृ. 76
14. साठोत्तरीकथा-साहित्य में श्रमजीवी नारी, सं. नंदकिशारे मिश्र, डा. जौहरा अफजल, भाषा, अंक 2, नवम्बर-दिसम्बर, 1999. पृ. 78
15. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप, डा. गणेश दास, पृ. 179
16. बाकी सब खैरियत है, पृ. 8
17. वही, पृ. 51
18. वही, पृ. 53
19. वही, पृ. 55

–षमीना. टी

शोध छात्र, हिन्दी विभाग

अविनाशालिंगम इंस्टीट्यूट फार होम साइन्स एंड हाइयर एडुकेशन फॉर वुमेन, कोइम्बत्तूर, तमिलनाडु

–डॉ. शोभना कोक्काडन

शोध निर्देशक, अविनाशालिंगम इंस्टीट्यूट फार होम साइन्स एंड हाइयर एडुकेशन फॉर वुमेन, कोइम्बत्तूर, तमिलनाडु